20 रकात तरावीह -
परीक्षा व व्यवच्छेद

अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के नाते से मुस्लिम समुदाय को अपनी बेपाया वरदानों व नेअ़मतों तथा रहमतों से संबोधित किया जिनका धन्यवाद व आदर व सम्मान करना नेअ़मतों में इज़ाफा व समावेश करने का वचन किया।

अल्लाह तआ़ला की इन विशाल व जलील नेअ़मतों में एक विशाल व आदरणीय नेअ़मत रमज़ान का महीना है। जिस में अल्लाह की रहमत के दरवाज़ें हमेशां खुले रहते हैं तथा अल्लाह के बन्दें हर इन अल्लाह की रहमत से बहरावर होते रहते हैं।

पालनहार ने अपनी अंतिम पुस्तक क़ुरान मजीद प्रकट फरमाने के लिए इसी मास का संकलन किया। अर्थात इस अनुसार से इस का सम्मान व आदर स्पष्ट करते हुए नाम की विशेषता के साथ क़ुरान हकीम में इस का वर्णन हैः-

भाषांतरः- रमज़ान का महीना वह महीना है जिस में क़ुरान करीम प्रकटन किया गया, जो सम्पूर्ण मानवता के लिए मार्गदर्शन के लिए, तथा मार्गदर्श और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के बीच स्पष्ठ निशानियाँ हैं।

(सुरह बक़रहः 02:185)

इस महीने के प्रारम्भ ही से आकाश के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। शैतानों को क़ैद व बन्द कर के जंजीरों में जकडे जाते हैं।

(सहीह मुस्लिम, हदीस संख्याः 2548)

इस प्रकार बन्दों के लिए नेकियों वाला साज़गार वातावरण प्रदान किया जाता है। अब प्रत्येक रात नेकी व भलाई का उद्देश्य करने वाले के लिए विशेष घोषणा होती है के ऐ भलाई के चाहने वाले नेकी कर, बुराई के इच्छुक के लिए घोषणा होती है क ऐ बुराई के चाहने वाले ! बुराई से बाज आजा।

(जामेअ़ अल तिरमीज़ी, हदीस संख्याः 648)

पालनहार कि प्रतिभा व शान बेनियाज़ी के बावजूद इस के दरबार से केवल बन्दों पर कृपा व महरबानी के लिए सेन्देश आता हैः कया कोई दुआ करने वाला है के इसे स्वीकार किया जाए? कया कोई मुक्ति व मोक्ष (मग़फिरत) का इच्छुक है के इसे बख्श दिया जाए ? कया कोई तबा करने वाला है के इस कि तौबा स्वीकार कर ली जाए?

(सहीह मुस्लिम, हदीस संख्याः 1810)

समुदाय पर कमाल स्तर प्रदान के आईनेदार हैं हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के पावन गुण व लक्षण में एक गुण दानशीलता व उदारता है। रमज़ान के मास में सरकार सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम अन्य महीनों कि समान अधिक दानशीलता व बख्शिश करते, जैसा के सहीह बुख़ारी शरीफ जिल्द 1, हदीस संख्याः 06 में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम लोगों में सब से अधिक उदारता व दानशीलता (औदार्य) फरमाने वाले हैं। तथा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की दानशीलता प्रत्येक समय से अधिक इस समय होजाती जब रमज़ान के माह में जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की पावन सेवा में उपस्थित होते। एवं रमज़ान की प्रत्येक रात आप उपस्थित हो कर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से क़ुरान करीम का दौर फरमाते, निस्संदेह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का क़ैर व भलाई में --- के लिए छोडी हुई तेज़ वायु व हवाओं से भी अधिक है।

(सहीह अल बुख़ारी, जिल्द 1, पः 06, हदीस संख्याः 06)

रमज़ान के मास कि विशिष्ठ उदारता से संबंधित इ़माम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांत- 458 हिज्री) की शुअ़बुल इ़मान में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से वर्णित है आप ने फरमायाः जब रमज़ान का महीना आता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हर कैदी व बन्दी को आजाद कर देते तथा हर मांगने वाले को दान करते।

(शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3475)

अल्लाह तआ़ला ने रमज़ान के महीने को रोज़े फर्ज़ किए। इसके अह्काम सामूहिक रूप से क़ुरान करीम में वर्णन किए तथा इनकी अधिक विस्तार व तफसील व जानकारी अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के जिम्मे कर दिया तथा आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को अह्काम स्थापित करने तथा इन का सवाब व पुण्य निर्धारित करने का सम्पूर्ण अधिकार प्रदान फरमाया।

क्यों के रमज़ान में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम अधिक दानशीलता व उदारता करते हैं, इसी लिए आप रमज़ान से संबंधित विशेष कर्मों व आमाल की शिक्षा फरमाए तथा इस सिलसिले में विशेष पुण्य व सवाब की बशारत सुनाईः-

भाषांतरः- नफ्ल का सवाब फर्ज़ के बराबर, फर्ज़ का सवाब 70 फर्ज़ों के बराबर, रोज़ेदार को इफ्तार करवाने पर रोज़ा रखने के सवाब कि बशारत दी, रोज़ेदार को पेट भर खिलाने पर जामे-कौसर से सैर अबी कि बशारत सुनया, मोमिन के रिस्ख में संचलन किए जाने का वर्णन किया।

(शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3455)

भाषांतरः- तथा एअ़तेकाफ करने वाले के लिए कुल नेक आ़माल करने वाले के बराबर पुण्य व सवाब मिलने की खुशी के समाचान सुनाए।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 590)

रमज़ान मुबारक के इन विशेष कर्मों पर विशेष पुण्य व सवाब से संबंधित हदीसों में नियुक्त है। क़ुरान करीम कि किसी आयत में स्पष्टीकरण के साथ इस का वर्णन नहीं, यह केवल सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्म कि उदारता की शान व प्रतिभा के गुण हैं। रमज़ान के मास के इन ही विशेष कर्मों में एक कर्म "तरावीह की नमाज़ है"।

तरावीह की नमाज़ की विशिष्टता

सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम, सुनन अबु दाउद, सुनन निसाई, जामे तिरमीज़ी, सुनन इ़ब्न माजह शरीफ आदि में तरावीह की नमाज़ कि प्रतिष्ठा व विशिष्टता से संबंधित हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जो व्यक्ति रमज़ान की रातों में इ़मान कि स्थिति व एकांतता इ़बादत करे इस के पिछले व पूर्व पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।

(सहीह बुख़ारी, जिल्द 1, पः 269, हदीस संख्याः 2009 / सहीह मुस्लिम, जिल्द 1, पः 259, हदीस संख्याः 1815 / जामेअ़ अल तिरमीज़ी, जिल्द 1, पः 147, हदीस संख्याः 619 / सुनन अबु दाउद, जिल्द 1, पः 194, हदीस संख्या 1373 / सुनन अन निसाई, जिल्द 1, पः 308, हदीस संख्या 2174 / सुनन इ़ब्न माजह, जिल्द 1, पः 118, हदीस संख्याः 1316 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 362)

तरावीह की नमाज़ का आदेश

तरावीह कि नमाज़ पुरुष लोग तथा महिलाओं दोनों के लिए सुन्नते-मौक़ेदह है। मसजिद में जमात के साथ तरावीह अदा करना, पुरुष लोग के लिए सुन्नते-किफाया है। यदि किसी इलाक़े के सम्पूर्ण सदस्य जमात छोड दें तो सब सुन्नत छोडने वाले घोषित पाएंगेः-

जैसे के दुर्रे मुक़तार में हैः-

भाषांतरः- तरावीह की नमाज़ पुरुष लोग तथा महिलाओं के लिए सुन्नते-मोक़ेदह है तथा इस में जमात सुन्नते-किफाया है।

(अल दुर्रे अलमुक़तार, जिल्द 1, पः 520)

बुख़ारी शरीफ में तरावीह की नमाज़ का वर्णन

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आदेश मुबारक के अतिरिक्त आपके धन्य कर्म से भी तरावीह का सबूत मिलता है। जैसा के बुख़ारी शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से वर्णित है फरमाती हैः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम रात के समय अपने भवन में नमाज़ संपादन फरमाया करते इस समय भवन के दीवार छोटी थीं, सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को देखा तथा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) से इखतेदा (पीछे नमाज़ पढ़ना) में नमाज़ पढने लगे, सवेरे हुई सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान ने बाह्म इस

का वर्णन किया, अर्थात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने दूसरी रात भी तरावीह की नमाज़ संपादन फरमाई तथा सहाबा किराम ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की इखतेदा की सौभाग्य प्राप्त किया, इन लोग ने 2 या 3 रात यही अ़मल किया (के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की इखतेदा (पीछे नमाज़ पढ़ना) में तरावीह संपादन फरमाए) यहाँ तक के इस के बाद सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम (पावन भवन में) तशरीफ फरमा रहे तथा बाहर तशरीफ नहीं लाय, जब सवेरे हुई तो सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान ने इस सिलसिले में आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) से निवेदन किया तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मुझे आशंका हुई के कहीं रात कि नमाज़ तुम पर फर्ज़ ना घोषित की जाए। (दूसरी रिवायत में यह शब्द भी वर्णन है- फिर तुम इस को संपादन ना कर सकोगे)।

(सहीह अल बुख़ारी, किताबुल आज़ान, जिल्द 1, पः 101, हदीस संख्याः 729 / किताबुल जुमअ़, जिल्द 1, पः 125, हदीस संख्याः 924 / किताबुल तहज्जुद, जिल्द 1, पः 152, हदीस संख्याः 1129 / किताबुल सौम, जिल्द 1, पः 269, हदीस संख्या 2012)

यह रिवायत सहीह बुख़ारी शरीफ में 3 से अधिक स्थान पर उपलब्ध है इस रिवायत में नमाज़ के संपादन का वर्णन है। किन्तु रकातों कि संख्या का वर्णन नहीं, शारह सहीह बुख़ारी साहिब फतहुल बारी हाफिज़ इब्न हज्र असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने अलतक़यस अल हबीर फी तक़रीज अहादीस अल राफअ़ अल कबीर में वर्णन रिवायत के अनुसर में 20 रकात के शब्द के स्पष्टीकरण करते हुए लिखा हैः-

भाषांतरः- हाँ! 20 रकात का वर्णन दूसरी रिवायत में आया है। जिसे इ़माम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत किया है।

(अलतक़यस अल हबीर फी तक़रीज अहादीस अल राफ़अ़ अल कबीर अल इ़ब्न हज्र असखलानी, हदीस संख्याः 540)

अधिक इ़माम इ़ब्न हज्र मक्की हैतमी रहमतुल्लाहि अलैह ने तरावीह की नमाज़ की रकातों की संख्या का वर्णन करते हुए अल मिनहाजुल खवीम में इसी अर्थ की रिवायत का वर्णन किया हैः-

भाषांतरः- "20 रकात" रमज़ान के महीने की प्रत्येक रात इ़बादत रमज़ान या सुन्नत तरावीह या तरावीह की नमाज़ की नीयत के साथ संपादन की जाती है अर्थात सहीह हदीस वर्णन है के हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने चार रातें तरावीह संपादन की तथा सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान ने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की इखतेदा में नमाज़ अदा की, फिर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तशरीफ नहीं लाए, बाखी महीनं अपने भवन में नमाज़ संपदान किए तथा आदेश फरमायाः मुझे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) आशंका हुई के नमाज़ तुम पर फर्ज़ हो जाएगी फिर तुम इस की क्षमता ना रखोगे।

(अल मिनहाजुल खवीम, ला इ़ब्न अल हैतमी)

अ़ल्लामा मुहम्मद बिन मुहम्मद अकमलुद्दीन बाबरती रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 786 हिज्री) अ़नायह शरह हिदायह में 20 रकात तरावीह से संबंधित विस्तार व तफसील के साथ लिखते हैः-

भाषांतरः- रिवायत है के हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम रमज़ान के महीने की रातों में से एक रात जलवागर हुए तथा आप ने 20 रकात नमाज़ संपादन की, फिर जब दूसरी रात आई तो सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान जमा हो गए, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम जलवागर हुए तथा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने 20 रकात नमाज़ पढाई। फिर जब तीसरी रात आई, सहाबा किराम बडी संख्या में जमा हुए, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम जलवागर नहीं हुए। आदेश फरमायाः मैं तुम्हारे जमा होने को जानता हुं परन्तु मुझे आशंका है के यह नमाज़ तुम पर फर्ज़ घोषित दी जाए अर्थात सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान ह़ज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा के ज़माने तक अलग-अलग नमाज़ संपादन करते रहे, फिर ह़ज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमायाः मैं श्रेष्ठतर समझता हुँ के लोगों को एक इ़माम की इखतेदा में जमा करदुं, फिर आप ने इन्हें ह़ज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की इखतेदा में जमा कर दिया तो इन्हों ने पांच तरावीह, 20 रकात पढाई।

(अल अ़नयाह शरह अल ह़िदायह लिल बारती)

उपर्युक्त रिवायतें से मालूम होता है के ह़ज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने 2, 3 या 4 रातें जमात के साथ तरावीह कि नमाज़ संपादन की फिर इस संदेह से के कहीं समुदाय पर फर्ज़ ना हो जाए तशरीफ नहीं लाय इ़माम इ़ब्न ह़ज्र मक्की हैतमी रहमतुल्लाहि अलैह के अनुसार बाखी महीने, काशाने अखदस में नमाज़ संपदान करते रहे।

इस से यह बात स्पष्ठ होती है के तरावीह की नमाज़ संपादन करना हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य कर्म व अ़मल से साबित है, अतिरिक्त इस के हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने जब सहाबा किराम को जमात से नमाज़ संपादन करते हुए दर्शन किया तो सन्तुष्टी फरमाई।

जैसा के सुनन अबु दाउद में रिवायत व्याख्या हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तशरीफ लाय, कया देखते हैं के सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान रमज़ान शरीफ में मसजिद के एक क्षेत्र में नमाज़ संपादन कर रहे हैं, तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने आदेश फरमायाः यह लोग कया कर रहे हैं ? तो निवेदन किया गयाः यह वह लोग हैं जिन्हों ने सम्पूर्ण रूप से क़ुरान करीम हिफ्ज़ (याद) नहीं किया है। तथा हज़रत उबई बिन कअ़ब इ़मामत कर रहे हैं एवं यह सहाबा उन की इखतेदा में नमाज़ संपादन कर रहे हैं, तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः इन्हों ने श्रेष्ठ व अच्छा किया तथा कया ही अच्छा कर्म व अ़मल है।

(सुनन अबु दाउद, जिल्द 1, पः 195, हदीस संख्याः 1379)

20 रकात तरावीह – सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम का अभ्यास

प्रथम हदीसः-

20 रकात का सबूत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के धन्य कर्म से-

तरावीह की नमाज़ से संबंधित जो परिमित व विस्तार रिवायतें शब्द के अंतर के साथ वर्णन हुईं इन का वर्णन किया जा चुका, जिस से तरावीह की नमाज़ जमात के साथ पढना साबित हुआ।

अधिकारपूर्ण हदीस कि किताबों तथा फिक़्ह कि पुस्तकों के हवाले से हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह धन्य कर्म वर्णन किया जाता है के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने 20 रकात तरावीह संपादन की।

मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, मुसनद अब्द बिन हमीद, शरह सहीह अल बुख़ारी ला बिन बताल, अल सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, अल मुअजम अल औसत लित तबरानी, अल असतज़कार वल जामअ अल मज़ाहिब फिक़्हा अल असार व उलेमा अल अखतार ला बिन अब्दुल अलबर, अल तमहीद अल माफी अल मवातामिन अल मआनी वा असानीद ला बिन अब्दुलबर्र, मजमअ अज़ जवाईद लिल हैतमी, खुलासतुल अहकामफी महमात अल सुनन व खवाइद अल इसलाम लिल नववी, नसब अल रायह फी तक़रीज अहादीस अल हिदायह लिल ज़ैलई, फतहुल बारी शरह सहीह बुख़ारी ला बिन हज्र असखलानी, अल मतालिब अलआलियह ला बिन हज्र असखलानी, अलतक़यस अ हबीर फी तक़रीज अहादीस अल राफअ अल कबीर हज्र असखलानी, फतहुल खदीर ला बिन हिम्माम, अ हावी लिल फतावा लिल सुयूती, तनवीर अल हवालिक लिल सुयूती, नेल अल औतार लिल सौ कानी, मुक़ता अल क़ालिख अला अल बहरुरराईख ला बिन आबिदीन अल शामी, सबुलुल हुदा वर्रिशाद लिल सालेह, अतहाफ अल क़ैरह अल महरह लिल

www.Ziaislamic.com

बौसीरही, हाशियह अल तहतावी अ़ला मराखी अल फलाह, ज़ुजाजातुल मसाबीह मुहद्दिसे-देक्कन तथा अल फिक़्ह अल इस्लामी वादलालतुल लिल ज़हीली में हदीस पाक पाक हैः-

भाषांतरः- सैयदना अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा से वर्णित है हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम रमज़ान के महीने में 20 रकात तरावीह और वित्र संपादन फरमाया करते थे।

(मुसन्नफ इ़ब्न अबी शैबा, जिल्द 5, पः 225, हदीस संख्याः 7774 / मुसनद अब्द बिन हमीद, हदीस संख्याः 655 / शरह सहीह अल बुखारी, जिल्द 5, पः 154 / अल सुनन अल कुबरा, जिल्द 2, पः 698, हदीस संख्याः 4615 / अल मुअ़जम अल औसत अल तबरानी, जिल्द 1, पः 444, हदीस संख्याः 802 / अल मुअ़जम अल कबीर अल तबरानी, जिल्द 5, पः 433 हदीस संख्याः 11934 / अल असतज़कार, हदीस संख्याः 222 / अल तमहीद अल मौतामिन अल मअ़ानी वल असातीद, जिल्द 8, पः 115 / मजमअ़ अज़ ज़वाईद, जिल्द 3, पः 172, हदीस संख्याः 5018 / क़ुलासतुल अल अहकाम फी महमाक अल सुनन वखू वअ़ाद अल इसलाम लिल नववी, जिल्द 1, पः 579, हदीस संख्याः 1971 / नसब अर रियाह फी तक़ीर अहादीस, किताबुस सलाह, फस्ल फी खियाम शहर रमज़ान, फतहुल बारी शरह सहीह अल बुखारी, बाब फज़्ल मिन खियाम रमज़ान, अल मुतालिब अल अ़ालियह ला मिन हज़्र असखलानी, किताबुल नवाफिल, बाब खियाम रमज़ान, जिल्द 1, पः 425, हदीस संख्याः 598 / अल तलक़ीसुल हबीरि ला मिन हज़्र असखलानी, जिल्द 2, पः 882, हदीस संख्याः 1676 / फतहुल बारी शरह अल हिदायह ला मिन अल हिम्माम, जिल्द 1, पः 485 / अल हावी लिल फतावा लिल सुयूती, पः 354 / तनवीर अल हवालिक शरह मौता अल इमाम मालिल लिल सुयूती, किताबुस सलाह फी रमज़ान, जिल्द 1, पः 134 / नील अल औतारी लिल शौकानी, बाब सलाह अल तरावीह / मिनह अल क़ालिख अ़ला अराईख ला मिन आबिदीन अस शामी, जिल्द 2, पः 117

/ सबुलुल हुदा वर्रिशाद, जिल्द 8, पः 267 / मिरखाह मफातीह शरह मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 175 / अतहाफुल क़ीरह मुरह, ह्दीस संख्याः 1725 / हाशियह अल तहतावी अ़ला मिराखी अल फलाह, फस्ल फी सलाह तरावीह / ज़ुजाजातुल मसाबीह, अल मुहद्दिसे-देक्केन, बाब खियाम शहर रमज़ान, जिल्द 1, पः 366 / अल फिक़्ह अल इसलामी, अल नवाफिल औ सलाह अत तवूअ)
)

20 रकात तरावीह पर सहाबा का अ़मल

सुनन अबु दाउद की रिवायत से मालूम हुआ के सहाबा किराम अ़लैहिमु वरिज़वान ने रमज़ान के मास में मस्जिद के भीतर जमात के साथ तरावीह की नमाज़ संपादनकी।

20 रकात तरावीह की संख्या का वर्णन अन्य अधिप्रमाणित रिवायतों में आया है के फारूखे-आ़जम के दौर में, उसमाने-ग़नी के दौर में, अ़लवी के दौर में तथा इस के बाद के और दौरों में इसी पर अ़मल हुआ।

यह वह धन्य दौर रहे हैं जिन में सहाबा किराम की अधिकांश व बहुसंख्य धरती पर उपस्थित थे तथा इखतआ़ आलम --- से इसलाम-जाति इन नबवी संगत लोगों कि सेवा में आकर इन से धर्म की शिक्षा सीखते। इन के मामलात व आचरण को अपने लिए आदर्श जानते।

आगते सूत्रों से मालूम होगा हिदायत के आकाश के इन चमकतें सितारों (नक्षत्र) ने 20 रकात तरावीह का प्रबंध किया है। अर्थात सहाबा किराम अलैहिमु वरिज़वान से आख्यान रिवायतें व्याख्या की जाती हैः-

दूसरी रिवायतः-

फारूख आज़म के दौर में 20 रकात तरावीह पर अमल

हज़रत उ़मर फारूख रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में लोग 20 रकात तरावीह संपादन करते थे जैसा के रिवायत व्याख्या हैः-

भाषांतरः- हज़रत यज़ीद बिन रोमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (देहांतः 130) से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः सैयदना उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में लोग 23 रकात (20 रकात तरावी तथा 3 रकात वित्र) पढते थे।

(मवत्ता इ़माम मालिक, जिल्द 1, पः 78, हदीस संख्याः 251 / खियाम रमज़ान अल मुहम्मद बिन नसर अल मरूज़ी / अल सियाम लिल फरियाबी, हदीस संख्याः 160 / अल सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, जिल्द 2, पः 699, हदीस संख्याः 4618 / शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, जिल्द 3, पः 177, हदीस संख्याः 2370 / मअ़रफह सुनन वल असार लिल बैहखी, हदीस संख्याः 1443 / फज़ाल अल औखात लिल बैहखी, हदीस संख्याः 124 / जामअ़ उसूल मिन अहादीस अर रसूल लाल बिन अल आसीर, हदीस संख्याः 4224 / हिदायह अल मजतहदू निहायहअ मुफतसद, जिल्द 1 पः 210 / अल काफी ला मिन खामह, किताबुस सलाह / कुलासहअल अहकाम फी महमात अल सुनन फुखू अ़द अल इसलाम, नसब अर रायह फी तक़रीज अहादीस अल हिदायह अल ज़ीअ़ली, फस्ल फी खियाम शहर रमज़ान /

ज़मदतुल खारी शरह सहीह अल बुखारी, जिल्द 4, पः 372 / फतहुल बारी शरह सहीह अल बुखारी, बाब तरावी / फतहुल खदीर ला मिन अल हिम्माम, जिल्द 1, पः 485 / अल बहरुर राईख शरह अल दखाईख, जिल्द 2, पः 117 / मिरखदह अल मफातीह शरह मिशकातुल मसाबीह, जिल्द 2 पः 175 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 1, पः 366 / अल मौसूअह अल फखीह अल कवीहयह, जिल्द 27 पः 161,162, वर्ष प्रकाशन तबआतः 1427)

अल्लामा बद्रुद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 855 हिज्री) ज़मदतुल खारी शरह सहीह अल बुखारी में इस रिवायत कि शरह करते हुए फरमाते हैः-

भाषांतरः- अल्लामा इब्न अब्दुल बर्र रहमतुल्लाहि अलैह (देहंतः 463 हिज्री) ने फरमायाः 23 रकात का तात्पर्य 3 रकात वित्र तथा 20 रकात तरावीह हैं।

(ज़मदतुल खारी शरह सहीह अल बुखारी लिल ऐनी, जिल्द 2 पः 245)

तीसरी रिवायतः-

तीसरी रिवायतः-

20 तरावीह के लिए हज़रत उमर फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का आदेश

हज़रत उमर फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इमामत करने वाले लोग को 20 रकात तरावीह पढाने की हिदायत देते, मुसन्नफ इब्न अबी शैबा में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत यहया बिन सईद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (देहांतः 143 हिज्री) से वर्णित है के सैयदना उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने एक व्यक्ति को 20 रकात तरावीह पढाने का आदेश दिया।

(मुसन्नफ इ़ब्न अबी शैबह, जिल्द 5, पः 223, अध्यायः 680, हदीस संख्याः 7764 / तोहफह अल अहवज़ी लिल मुबार कफूरी, बाब माजह फी खियाम शहर रमज़ान)

चौथी रिवायतः-

इ़माम बुखारी के दादा अध्यापक मुहद्दिस अबुर रज़्ज़ाख बिन हिम्माम सनआ़फी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 211 हिज्री) अपनी रचना में सहाबी रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हज़रत साईब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत व्याख्या करते हैः-

भाषांतरः- हज़रत साईब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (देहांतः 80 हिज्री) से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हम हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के धन्य दौर में रात कि इ़बादत से वापस होते जबके सुबह सवेरे का समय खरीब आ जाता तथा हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में रात कि नमाज़ 23 रकात (20 रकात तरावीह तथा 3 रकात वित्र) होती।

(मुसन्नफ अब्दुर रज़्ज़ाख, जिल्द 4, पः 108, हदीस संख्याः 7733)

इस रिवायत से 20 रकात तरावीह कि नमाज़ पर सहाबा किराम का अ़मल साबित होने के साथ यह भी मालूम होता है के लम्बा खियाम, अधिक तिलावत सहाबा किराम का मान्य.रहा है।

हज़रत साईब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि रिवायत तथा मुहद्दिसीन के विचार

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैह ने खुलासह अल अहकाम में हज़रत साईब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि वर्णन रिवायत से संबंधित लिखा हैः-

भाषांतरः- इस हदीस को इमाम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह ने सनद सहीह से रिवायत किया है।

(क़ुलासह अल अहकाम फी महमात अल सुनन वा खवाईद अल इसलाम अल नववी, हदीस संख्याः 1961)

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैह की प्रूफ़-शोदन को इमाम ज़ैलईअ रहमतुल्लाहि अलैह ने नसब अल रियाह फी तक़ीज अहादीस अल हिदायह में अल्लामा इब्न हिम्माम ने फतहु बारी में, अल्लामा बद्रुद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह ने उमदतुल खारी में, इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह ने अलहावी लिल फतावी में, मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह ने मिरखातुल मफातीह शरह मिशकातुल मसाबीह में व्याख्या किया है।

(नसब अर राबियह फी तक़रीज अहादीस अल हिदायह लिल ज़ैलीअ, किताबुस सलाह फस्ल फी खियाम शहर रमज़ान / फतहुल खदीर ला मिन अल हिम्माम किताबुस सलाह, जिल्द 1, पः 485 / उमदतुल खारी शरह सहीह अल बुखारी, किताबुल अज़ान, जिल्द 4, पः 372 / अल हावी लिल फतावा लिल सुयूती, किताबुस सलाह, अल मसाबीह फी सलाह अल तरावीह / मिरखातुल मफातीह शरह मिशकात अल मसाबीह, जिल्द 2 पः 175)

पांचवी रिवायतः-

इ़माम बैहखी कि सुनन सुग़रा तथा मअ़रूफह अल सुनन वल असार में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत साईब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (देहांतः80 हिज्री) से वर्णित है, आप ने फरमाया के हम हज़रत उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के खिलाफत के दौर में में 20 रकात तरावीह तथा वित्र पढा करते।

(अल सुनन अल सुग़रा लिल बैहखी, हदीस संख्याः 833 / मअ़रूफह अल सुनन वल असार लिल बैहाखी, हदीस संख्याः 1443 / नसब अर रायह फी तक़रीज अहादीस, फसल फी खियाम, शहर रमज़ान / फतहुल खदीर ा मिन अल हिम्माम, जिल्द 1, पः 485 / मिरखातुल मफातीह शरह मिशकातुल मसाबीह, जिल्द 2, पः 175 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, अल मुहद्दिसे-देक्कन, किताबुस सलाह, बाब खियाम शहर रमज़ान / तोहफतुल अहवज़ी लिल मुबार कफूरी, बाब माजह फी खियाम शहर रमज़ान)

अल्लामा कमालुद्दीन मुहम्मद मअ़रूफ बा इ़ब्न हिम्माम रहमतुल्लाहि अलैह (देहंतः 861 हिज्री) साहिब फतहुल खदीर ने इस हदीस पाक को व्याख्या करे के बाद इ़माम नववी के हवाले से वर्णन रिवायत की सनद की सहत से संबंध लिखा हैः-

भाषांतरः- इ़माम नववी रहमतुल्लाहि अलैह (देहंतः 676 हिज्री) क़ुलासा अल अहकाम में कहा के इस कि सनद सहीह है।

(फतहुल खदीर ला मिन अल हिम्माम, जिल्द 1, पः 485)

6 रिवायतः-

अदिक जामअ अलहादीस तथा कंज़ुल उ़म्माल में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के हज़रत उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने इन्हें रमज़ान की रात में नमाज़ (तरावीह) पढाने का आदेश देते हुए कहा के लोग दिन में रोज़ा रखते हैं तथा वह श्रेष्ठ रूप से खिरात नहीं कर सकते, यदि आप रात (तरावीह) में खिरात (अनुवाचन) करें तो श्रेष्ठ होगा, इन्हों ने निवेदन कियाः ऐ अमीरुल मोमिनीन (विश्वासियों के मुखिया) यह ऐसा कर्म है जो अब तक (स्थाई रूप से जमात के साथ) नहीं हुआ, तो आप ने कहाः अवश्य मैं जानता हुँ किन्तु यह अच्छा कार्य है, तो हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अहले इसलाम को 20 रकता तरावीह की नमाज़ पडाई।

(जामअ़ अल हादीस लिल सुयूती, हदीस संख्याः 28604 / कंज़ुल उ़म्माल फी सुनन अखवाल, जि्द 8, पः 192, हदीस संख्याः 23466 / अल तिहाफ अल क़ैरह अल महरह, हदीस संख्याः 1726)

हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने जो निवेदन किया "यह ऐसा कर्म है जो अब तक सथाई रूप से जमात के साथ नहीं हुआ" इस का तात्पर्य यही है के सिलसिले से पूरे महीने भर जमात के साथ तरावीह का प्रबंध इस से पूर्व कभी नहीं हुआ।

वरना इस से पूर्व कई बार जमात के साथ तरावीह के संपादन हो चुकी जैसा के हदीस पाक के हवाले से गुज़र चुका है के सहाबा किराम ने प्रारंभ में 3 या 4 रातें सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि इख्तेदा में तरावीह कि नमाज़ संपादन की।

फिर जमात के साथ सहाबा किरामने खुद हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु कि इखतेदा (पीछे नमाज़ पढना) में समय पर तरावीह कि नमाज़ पढी तथा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने दर्शन फरमा कर सन्तुष्टी व सकार फरमाया। किन्तु सिलसिले के साथ पूरे रमज़ान में जमात के साथ तरावीह कि नमाज़ नहीं पढी गई थी।

7 रिवायतः-

हज़रत उसमान के ज़माने में 20 रकात पर अ़मल

भाषांतरः- हज़रत साईब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के लोग सैयदना उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के ज़माने में रमज़ान में 20 रकात तरावीह पढते, तथा 100-100 आयतों वाली सुरतें (जैसे बर्राह, नहल, हूद आदि) तिलावत करते थे तथा हज़रत उसमान बिन अ़फ्फान रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के दौर में लम्बे खियाम के कारण से अपनी लाठियों का सहारा लेते थे।

(अल सियाम लिल फरियाबी, हदीस संख्याः 158 / अल सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, जिल्द 2, पः 699, हदीस संख्याः 4617 / फ़ज़ाईल अल औखात लिल बैहखी, जिल्द 4, पः 372 / मिरखातुल मफातीह शरह मिशकातुल मसाबीह, जिल्द 2, पः 175)

इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 676 हिज्री) ने क़ुलासा अल अहकाम में इस रिवायत के सहीह होने का वर्णन किया हैः-

भाषांतरः- इमाम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 676 हिज्री) ने इसे सनद सहीह से रिवायत किया।

(क़ुलासा अल अहकाम, हदीस संख्याः 1961)

इस के अतिरिक्त मुल्ला अ़ली खारी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 1014 हिज्री) ने भी मिरखाह अल मफातीह, में इमाम नववी रहमतुल्लाहि अलैह के इस निर्णय का वर्णन किया है।

(मिरखाह अल मफातीह शरह मिशकातुल मसाबीह, जिल्द 2, पः 175)

8 रिवायतेः-

20 रकात तरावीह हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का आदेश

इमाम बैहखी की सुनन कुबरा तथा इमाम बद्रुद्दीन ऐनी की उ़मदतुल खारी शरह सहीह बुखारी में हदीस पाक उपलब्ध हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु अब्दुल रहमान सुलैमी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (देहांतः 74 हिज्री) सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित करते हैं के आप ने रमज़ान के मास में हुफ्फाज़ को बुलाया तथा इन में से एक व्यक्ति को आदेश दिया के 20 रकात तरावीह पढाएं।

(अल सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, जिल्द 2, पः 699, हदीस संख्याः 4620 / ज़ुजाजातुल मसाबीह अल मुहद्दिसे-देक्कन, किताबुस सलाह, बाब खियाम शहर रमज़ान, जिल्द 1, पः 366 / उ़मदतुल खारी शरह सहीह अल बुखारी लिल ऐनी, जिल्द 5, पः 459 / तोहफतुल अल अहज़ी, बाब माजह फी खियाम शहर रमज़ान)

9 रिवायतः-

पाँच तरावीह - 20 रकात पढाने का आदेश

मुसन्नफ इ़ब्न अबी शैबा, इ़माम बैहखी की सुनन कुबरा, तथा इ़माम अ़ली अल मुफती की कंज़ुल उ़म्माल आदि में हदीस पाक वर्णन हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबुल हसना रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के सैयदना अ़ली रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने एक व्यक्ति को आदेश दिया के लोगों को पांच तरावीहयत यथा 20 रकात पढाएं।

(मुसन्नफ इ़ब्न अबी शैबह, किताबुस सलात, जिल्द 5, पः 223, बाब 680, हदीस संख्याः 7763 / अल सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, किताबुस सलाह, जिल्द 2, पः 699, हदीस संख्याः 4621 / जामअ़ अल हादीस लिल सुयूती, हदीस संख्याः 32496 / कंज़ुल उ़म्माल फी सुनन अल अखवाल, जिल्द 4, पः 192 हदीस संख्याः 23469 / अल शरीअ़ह लिल अजरी, हदीस संख्याः 1215 / उ़मदतुल खारी शरह सहीह अल बुखारी लिल ऐनी, जिल्दः 8, पः

246 / अल जवहरुल नखा अ़ला सुनन अल बैहखी ला मिन अल तरकमानी, जिल्द 2, पः 495 / तोहफतुल अल अहवज़ी लिल मुबार कफूरी, खियाम सहर रमज़ान)

उपर्युक्त हदीस की सनद के रावी उ़मरह बिन खैस के बारे में अ़ल्लामा इ़ब्न तरकमानी रहमतुल्लाहि अलैह ने अल जवाहिर अ नखी में लिखा हैः-

भाषांतरः- "उ़मरह बिन खैस" से संबंधित मैं समझता हुं के वह "उ़मरह बिन खैस मलाई" हैं। इ़माम अहमद हज़रत यहया, हज़रत अबु हातिम, हज़रत अबु ज़रअ़ह व अन्य इ़माम मुहद्दिसीन ने इन्हें अधिप्रमाणित कहा है।

(अल जौहर अल नखी अ़ला सुनन अल बैहखी, जिल्द 2, पः 496)

खुलेफा राशेदीन की सुन्नत पर अ़मल ---

हदीसों के संचयन की इन अधिप्रमाणित व अधिकारपूर्ण पुस्तकों से साबित हुआ के 20 रकात तरावीह पर ना केवल 3 खुलेफा का अ़मल रहा। बल्कि वह इस बातका आदेश भी दिया करते के तरावीह 20 रकात पढाई जाए।

इसलामी कानून में कुलेफा राशेदीन की सुन्नत का स्थाई स्थान व बार है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने इन लोगों की सुन्नत को अधिकार करने का अनुदेशी आदेश किया। सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम का आदेश हैः-

भाषांतरः- मेरी सुन्नत तथा हिदायत पा चुके वाले खुलेफा राशेदीन की सुन्नत अनिवार्य कर लो तथा इसे मजबूती के साथ थामम लो।

(सुनन अबु दाउद, हदीस संख्याः 4607 / सुनन इब्न माजह, जिल्द 1, पः 5, हदीस संख्याः 44 / अल मुसतदरक अ़ला सहीहैन, जिल्द 1, पः 288, हदीस संख्याः 333 / मुसनद अल इ़माम अहमद, जिल्द 4, पः 156, हदीस संख्याः 17149 / अल सहीह ला मिन हिब्बान, जिल्द 1, पः 179, हदीस संख्याः 05 / अल सुनह अल मुहम्मद बिन नसरुल मरवूज़ी, जिल्द 1, पः 56 / अल अबातह अल कुबरा ला बिन बतह, हदीस संख्याः 148 / अल मुअ़जम अल कबीर लिल तबरानी, जिल्द 7, पः 322, हदीस संख्याः 15021 / अल मुअ़जम अल औसत लिल तबरानी, जिल्द 1, पः 79, हदीस संख्याः 66 / अ सुनह ला मिन आ़सिम, हदीस संख्याः 46 / मुसद अल सामीन लिल तबरानी, हदीस संख्याः 426 / शरह मआ़नी अल आसिर, हदीस संख्याः 468 / मशकिल अल असार लिल तहावी, हदीस संख्याः 988 / सुनन अल दारमी, बाब इत्तेबासुन्नत, जिलद 1, पः 57, हदीस संख्याः 95 / अल सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, जिल्द 10, पः 195, हदीस संख्याः 20338 / शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, जिल्द 6, पः 67, हदीस संख्याः 7515 / मअ़रफह अल सुनन वल असार लिल बैहखी / अल एअ़तफाद लिल बैहखी, हदीस संख्याः 210 / मअ़रफह अल सहाबह ला मिन नई़म हदीस संख्याः 4995 / अल औसत ला मिन अल मुनज़र, हदीस संख्याः 128 / शरह अल सुनह लिल बग़वी / रियाज़ अल सालेहीन लिल नववी, बाब 16, हदीस संख्याः 02 / जामअ़ उसूल मिन अहादीस अर रसूल ला मिन असीर, हदीस संख्याः 67 / जामअ़ अहादीस लिल सुयूती, हदीस संख्याः 9580 / अल जामअ़ अल कबीर अल सुयूती, हदीस संख्याः 7920 / कंज़ुल उ़म्माल फी सुनन अल अखवाल वल अफवाल, जिल्द 1, पः 100, हदीस संख्याः 870 / मवूरद अल ज़मान, जिल्द 1, पः 56)

मुहद्दिसे-देक्कन अबुल हसनात हज़रत सैय्यद अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी खादरी हनपी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 1384 हिज्री) फरमाते हैः-

भाषांतरः- तरावीह की नमाज़ में सम्पूर्ण 20 रकातें सुन्नते-मोकेदह हैं, क्यों के यह इन कर्मों व आमाल में से है जिन पर खुलेफाए राशेदीन ने मवाज़िबत की है, तथा पूर्व में गुज़र चुका के खुलेफाए राशेदीन की सुन्नत भी अनिवार्य पालन करना है तथा इसे छोडने वाला पापी है।

(हाशियह ज़ुजाजातुल मसाबीह अल मुहद्दिसे-देक्कन, किताबुस सलाह, बाब खियाम शहर रमज़ान, जिल्द 1, पः 366)

खुलेफा राशेदीन के साथ अन्य सहाबा किराम व ताबईन इज़ाम भी 20 रकात तरावीह का प्रबंध किया करते थे, पूर्व में इसी से संबंधित चंद रिवायत पेश की जा रही हैं।

10 रिवायतः-

20 रकात तरावीह पर अन्य सहाबा किराम का अमल

20 रकात तरावीह मदीने मेः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुर रज़्ज़ाख बिन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहांतः 130 हिज्री) से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः सैयदना उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रमज़ान में मदीने में 20 रकात तरावीह की इमामत फरमाते तथा 3 रकात वित्र पढाते।

(अल मुसन्नफ ला बिन अबी शैबह, जिल्द 5, बाब 680, हदीस संख्याः 7766 / तोहफतुल अल अहवज़ी लिल मुबार काफूरी, जिल्द 3, पः 445 / खियाम रमज़ान जिल्द 1, पः 21)

11 रिवायतः-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का अ़मल

उ़मदतुल खारी सरह सहीह बुखारी में अ़ल्लामा बद्रुद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अ़मस के हवाले से एक रिवायत वर्णन की है, जिस में स्पष्ठ रूप से वर्णन है के सहाबा किराम रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 20 रकात तरावीह पढाया करतेः-

भाषांतरः- हज़रत अ़मशरदि (देहांतः 148 हिज्री) से रिवायत है वह हज़रत ज़ैद बिन वहब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु (देहंतः 183 हिज्री) से रिवायत करते हैः- आप ने फरमाया के हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु रमज़ान के महीने में हमारी इ़मामत करते तथा हज़रत अ़मश कहते हैं के आप 20 रकात तरावीह तथा 3 रकात वित्र पढाते।

(उ़मदतुल खारी शरह सहीह अल बुखारी, जिल्द 8, पः 246)

20 रकात तरावीह पर सम्पूर्ण सहाबा किराम का समानता

भाषांतरः- तथा "मुग़नी" में हज़रत अ़ला मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की रिवायत वर्णन है के आप ने एक व्यक्ति को आदेश दिया के वह रमज़ान मुबारक में तरावीह नमाज़ 20 रकात पढाईं। इस की शरह करते हुए इ़माम इ़ब्न अ़बदुल बर्र रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 463 हिज्री) ने फरमायाः सहाबा किराम का यह अ़मल किया अतः एकमत्य व अनुकूलता है।

(उ़मदतुल खारी लिल ऐनी, जिल्द 5, पः 459)

साहिब तबईन अल हखाईख अ़ल्लामा फख्रुद्दीन उ़समान बिन अ़ली ज़ेलई रहमतुल्लाहि अलैह (देहंतः 743 हिज्री) फरमाते हैः-

भाषांतरः- तथा हमारी दलील वह रिवायत है जिसे इ़माम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 458 हिज्री) ने सहीह सनद के साथ वर्णन किया है के हज़रत सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के खिलाफत के दौर में तरावीह 20 रकात संपादन किया करते, तथा इसी प्रकार हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु तथा हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के खिलाफत के दौर में अ़मल जारी रहा तथा (20 रकात तरावीह पर) सहाबा किराम का अनुकूलता व ऐक्य हो गया।

हज़रत मुल्ला अ़ली खारी रहमतुल्लाहि अलैह अल बारी (देहांतः 1014 हिज्री) ने मिरखाह अल मफातीह शरह मिशकात मसाबीह में लिखा हैः-

भाषांतरः- बहरहाल सहाबा किराम ने तरवीह की नमाज़ 20 रकात होने पर सन्तुष्टी व अनुकूलता किया है।

(मिरखाह अल मफातीह शरह मिशकातुल मसाबीह, जिल्द 2, पः 175)

ह़ज़रत शम्स अल इ़माम सरखसी ह़नफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 483 हिज्री) ने मबसूत में लिखा हैः-

भाषांतरः- तरावीह की 20 रकात पर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम का सर्वसम्मति होना, इस कर्म की दलील है के दिन-रात में फर्ज़ व वाजिब नमाज़ें 20 रकात हैं तथा यह संख्या इसी समय होगी जब के वित्र को वाजिब घोषित किया जाए।

(अल मबसूत लिल सरक़सी, किताबुस सलाह)

20 रकात में किसी सहाबा का असमानता नहीं

विद्वानों का देश अ़ल्लामा कासानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 587 हिज्री) बिदअ़ा अल सिनअ़ा में लिखते हैः-

भाषांतरः- तरावीह तो 20 रकात ही हैं, यह अधिक विद्वानों का कथन है तथा यही सहीह है क्यों के सैयदना उ़मर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने रमज़ान के महीने में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम को ह़ज़रत उबई़ बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की इख्तेदा में जमा किया तो इन्हों ने सहाबा को प्रत्येक रात 20 रकात तरावीह पढाई एवं किसी ने 20 रकात पर विरोध नहीं किया, इस प्रकार सहाबा किराम का इस पर अनुकूलता हो गया।

(बिदअ़ा अल सिनअ़ा अल कासानी, जिल्द 1, पः 644)

20 रकात पर प्रवासी सहाबा व मदीने के निवासी का सन्तुष्ठता – अल्लामा इ़ब्न तैयमिया की स्पष्टीकरण

अ़ल्लामा इ़ब्न तैयमिया (देहांतः 728 हिज्री) ने मजमुअ़ा अल फतावा में लिखा हैः-

भाषांतरः- यह बात सबूतों कि चोटी को पहुंच चुकी है के हज़रत उ़बई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु रमज़ा की मास में 20 रकात की इ़मामत करते तथा 3 रकात वित्र पढाते, अर्थात बहुत सारे विद्वानों का विचार है के यही सुन्नत है। क्यों के हज़रत उ़बई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने यह कर्म प्रवासी सहाबा (मुहाजिरीन) व मदीने के निवासी (अन्सार) के उपस्थिति में किया एवं किसी ने इस का इन्कार नहीं किया।

(मजमुअ़ा अल फतावा, जिल्द 23, बाबुस सलाह अल ततऱ्, पः 112)

अधिक शेख इ़ब्न तैयमिया ने अपने फतावा में लिखा हैः-

भाषांतरः- 20 रकात तरावीह पर अधिक मुसलमानों का अ़मल है।

(मजमुअ़ा अल फतावा, जिल्द 23, बाबुस सलाह अल तवऱ्, पः 112)

वज़ारतुल औखाफ कुवैत कि ओर से प्रकृतिस्थ फिक़्ह अल इसलामी के विद्यावली व सारसंग्रह अल मवसवह अल फिक़्हय अल कौतैतह में वर्णन हैः-

भाषांतरः- अ़ल्लामा दसूखी रहमतुल्लाहि अलैह तथा अन्य विद्वानों ने कहा हैः 20 रकात तरावीह पर सहाबा किराम व ताबई़न का अ़मल रहा है।

(अल मवसवह अल फिक़्हय अल कोतैयह, किताबुस सलाह, प्रकाशकः वज़ारतुल औखात वल शौ वन अल इसलामियह)

अल फिक़्ह अल इसलामी वदालह में अहनाफ धर्म के प्रति विवेचना हैः-

भाषांतरः- तरावीह सुन्नत है तथा इसकी 20 रकातें हैं। जो 2 रकात 10 सलाम के साथ संपादन कि जाएगी, इस के बाद वित्र संपादन कि जाएगी, रमज़ान के अतिरिक्त महीनों में वित्र जमात के साथ संपादन नहीं कि जा सकती तथा हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का अ़मल 20 रकात तरावीह पर दलील है के आप (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) ने अंत में मसजिद नबवी शरीफ में 20 रकात पर लोगों को जमा फरमा दिया। तथा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने इस पर आप के साथ सहमत किया तथा खुलेफा राशेदीन के बाद भी किसी ने इन का विरोध नहीं किया।

(अल फिक़्ह अल इसलाम, अलनवाफिल इ़न्द हनफियह)

20 रकात तरावीह पर ताबई़न का अमल

प्रथम रिवायतः

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन खैस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत शैतर बिन शकल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 69 हिज्री) से वर्णित करते हैं के वे रमज़ान के महीने में 20 रकात तरावीह एवं वित्र की नमाज़ पढ़ते थे।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 05, पः 222, हदीस संख्याः 7762 / सुनन कुबरा, किताब उस सलाह, जिल्द 02, पः 699, हदीस संख्याः 4619 / फज़ाइल उल औखात लिल बैहखी, हदीस संख्याः 124)

हज़रत शैतर बिन शकल की रिवायतें सहीह बुखारी के अतिरिक्त बाखी पाँचों सहीह पुस्तकों (कुतुब) में उपलब्ध हैं। अधिक इमाम बुखारी ने अल आदाब अल मुफस्सिद में आप से रिवायत की है।

हाफिज़ इब्न अज्र असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 852 हिज्री) ने तहज़ीब उत तहज़ीब में हाफिज़ इब्न हज्र असखलानी के बारे में लिखा हैः-

भाषांतरः इमाम नसाई ने कहाः हज़रत शैतर बिन शकल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु माननीय एवं विश्वसनीय, इब्न हिब्बान ने आप को विश्वसनीय रावियों में लिखा है, इब्न सअद ने कहा के आप दलील के योग्य हैं तथा कम रिवायत करने वाले हैं, अजली कहते हैं के आप माननीय व विश्वसनीय रावी तथा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के छात्र हैं।

(अत तहज़ीब उत तहज़ीब, जिल्द 04, पः 273/274)

अधिक हाफिज इब्न हज्र असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने अल इसाबा फी मआरिफतिस सहाबह में लिखा हैः-

भाषांतरः हज़रत शैतर बिन शकल अबसी नामवर ताबई हैं, अबु मूसा मदीनी ने वर्णित किया है के उन्हों ने हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का उच्च ज़माना पाया है।

(अल इसाबा फी मआरिफतिस सहाबह, हरफुश शीन)

हज़रत सुवैद बिन ग़फलह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अमल 20 रकात तरावीह पर

दूसरी रिवायतः

इमाम बैहखी ने सुनन कुबरा में रिवायत व्याख्या की है के महान ताबई हज़रत सुवैद बिन ग़फलह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 81 हिज्री) 20 रकात तरावीह पढ़ाते अर्थात रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत अबुल खुसैब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं हज़रत सुवैद बिन ग़फलह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमारी इमामत करते तथा पाँच तरावीह यथा 20 रकात तरावीह पढ़ाते।

(सुनन कुबरा लिल बैहखी, किताब उस सलात, जिल्द 02, पः 699, हदीस संख्याः 4619)

इस रिवायत को व्याख्या करने के बाद इमाम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः

भाषांतरः इस रिवायत की सनद कड़ी अधिप्रमाणित है।

(सुनन कुबरा लिल बैहखी, किताब उस सलाह, जिल्द 02, पः 699, हदीस संख्याः 4619)

इमाम इब्न अब्दुल बिर्र रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत सुवैद बिन ग़फलह रहमतुल्लाहि अलैह से संबंधित लिखा है के उन्हों ने अज्ञानता के ज़माना पाया, किन्तु सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन दर्शन से संबोधित ना हो सके, वे अज्ञानता में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के व्यापारी साझीदार रहे, जिस दिन नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पावन शरीर को धन्य रौज़े में रखा गया उसी दिन मदीना आए, उन्हों ने 125 वर्ष की उम्र पा कर हज्जाज बिन यूसुफ के ज़माने में 81 हिज्री में देहान्त पाई।

(अल इसाबा फी मआरिफतिस सहाबह, हरफुश सीन)

तीसरी रिवायतः

हज़रत हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 20 रकात तरावीह की इमामत किया करते

हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के छात्र हज़रत हारिस हमदानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 65 हिज्री) से रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के वे रमज़ान के महीने की रात में 20 रकात तरावीह की इमामत करते, 3 रकात वित्र पढ़ाते तथा रुकू से पूर्व खुनूत पढ़ते।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, किताब उस सलात, जिल्द 05, पः 224, हदीस संख्याः 7767)

हज़रत अबुल बक़तारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 20 रकात तरावीह की इमामत करते

चौथी रिवायतः

भाषांतरः हज़रत अबुल बक़तरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 83 हिज्री) से वर्णित है के वे रमज़ान के महीने में 5 तरावीह (20 रकात) पढ़ते तथा 3 रकात वित्र संपादन करते।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 05, पः 224, हदीस संख्याः 7768)

हज़रत अबुल बक़तरी सईद बिन फेरोज़ महान ताबई हैं, हाफिज़ इब्न हज्र असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिसान उल मिज़ान में लिखा है के अबु

ज़रआ एवं इब्न मईन ने आप को माननीय व अधिप्रमाणित घोषित किया है।

(लिसान उल मिज़ान)

20 रकात तरावीह – हज़रत अता रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गवाही

पाँचवी रिवायतः

भाषांतरः हज़रत अता रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 114 हिज्री) से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः मैं ने लोगों को (20 रकात तरावीह, 3 रकात वित्र) सम्पूर्ण 23 रकात पढ़ते हुए पाया।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, किताब उस सलात, जिल्द 05, पः 224, हदीस संख्याः 7770 / फत्हुल बारी शरह सहीह बुखारी, बाब सलात उत तरावीह)

हज़रत अता बिन अबी रिबाह माननीय व महान ताबई हैं। ताबईन की जमात के बुलंद स्तर, उच्च लोगों में शुमार किए जाते हैं। आपका देहान्त 114 हिज्री में हुआ। कई एक सहाबा किराम से आप को मिलने का धन्य अवसर प्राप्त है। वे लोग जिन्हें हज़रत अता बिन अबी रिबाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 20 रकात तरावीह पढ़ते हुए पाया, सहाबा किराम एवं महान ताबईन हैं।

20 रकात तरावीह इब्न अबी मुलैका रहमतुल्लाहि अलैह का अमल

छठी रिवायतः

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के आज़ाद किए गुलाम हज़रत नाफेअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, उन्हों ने फरमायाः हज़रत इब्न अबी मुलैका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 117)

हमें रमज़ान के महीने में 20 रकात पढ़ाते थे तथा एक रकात में सुरह फातिर की संख्या तिलावत करते।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 05, पः 223, हदीस संख्याः 7765)

20 रकात तरावीह हज़रत अली बिन रबीई रहमतुल्लाहि अलैह का अमल

सातवीं रिवायतः

मुसन्नफ इब्न अबी शैबा में हैः-

भाषांतरः हज़रत सईद बिन उबैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हज़रत अली बिन रबीई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रमज़ान में अहले इसलाम को पाँच तरवीहात (20 रकात) पढ़ाया करते तथा 3 रकात वित्र पढ़ाते।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 05, पः 224, हदीस संख्याः 7772)

हज़रत अली बिन रबीई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत की हुई हदीस सिहा सित्ता में उपलब्ध है। मुहद्दिस इब्न सअद ने तबखात में लिखा है के हज़रत अली बिन रबीई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु माननीय व मशहूर एवं उत्कृष्ट ताबई हैं, हज़रत अली- हज़रत ज़ैद बिन अरखम एवं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के छात्र हैं।

(तबखात उल कुबरा लिल इब्न सअद)

इमाम ज़हबी ने सियर उल आलाम उन नुबला में लिखा है के अली बिन रबीई इसलाम के विद्वानों में शामिल हैं। आप की रिवायतें हज़रत अली, हज़रत असमा बिन हक्म,हज़रत मुग़ैरा एवं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से उपलब्ध हैं। यहया बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैह ने आप को माननीय रावी (कथावाचक) घोषित किया।

(उल आलाम उन नुबला)

आठवीं रिवायतः

इमाम बुखारी रहमतुल्लाहि अलैह के दादा अध्यापक मुहद्दिस अब्दुर रज़्ज़ाख रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 211 हिज्री) जिन की 2496 रिवायतें सिहा सित्ता के शामिल की हुई मुसनद इमाम अहमद तथा सुनन दारख्खुतनी में उपलब्ध है।

आप अपनी मुसन्नफ में सनद के साथ वर्णन करते हैः-

भाषांतरः इमाम अब्दुर रज़्ज़ाख रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत सुफयान सौरी से तथा आप ने हज़रत इसमाईल बिन अब्दुल मलिक से रिवायत की के हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (देहान्तः 95 हिज्री) रमज़ान के महीने में हमारी इमामत करते तथा दो तरीक़ों से खिरात करते, एक रात हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तरीक़े के अनुसार खिरात करते तथा 5 तरवीहात 20 रकात संपादन किया करते।

(मुसन्नफ अब्दुर रज़्ज़ाख, जिल्द 04, पः 110, हदीस संख्याः 7749)

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फुक़्हा किराम, ताबईन से हैं, जिन की रिवायतें सिहा सित्ता में उपलब्ध हैं। इमाम सुयूती ने तबखात उल हुफ्फाज़ में लिखा हैः-

भाषांतरः जब कूफा वालों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास मसला पूछने के लिए उपस्थित होते तो आप फरमातेः क्या तुम में सईद इब्न जुबैर नहीं नहीं! एवं हज़रत अम्र बिन मैमून अपने पिता से वर्णित (रिवायत) करते हैं के निश्चय सईद बिन जुबैर का देहान्त

हुआ तथा धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति उपलब्ध नहीं के जिसे आप के ज्ञान की आवश्यकता ना हो।

(तबखात उल हुफ्फाज़ लिस सुयूती, अल तबखात उस सलिसा)

इमाम बद्रउद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह ने उमदतुल खारी शरह सहीह बुखारी में उदाहरण के रूप में कुछ ताबईन के नाम लिके हैं जो 20 रकात तरावीह आयोजित करतेः

भाषांतरः अब रहा ताबईन में जो लोग 20 रकात तरावीह के आयोजित करते हैं इन के नाम निम्नलिखित हैः- हज़रत शैतर बिन शकल, हज़रत इब्न अबी मुलैका, हज़रत हारिस हमदानी, हज़रत अता बिन अबी रिबाह, हज़रत अबुल बक़तरी, हज़रत हसन बसरी के भाई हज़रत सईद बिन अबुल हसन, हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबु बक्र, हज़रत इमरान अबदी अलैहि रहमतु वा रिज़वान।

(उमदतुल खारी शरह सहीह बुखारी अल ऐनी, किताब उत तरावीह, जिल्द 08, पः 246)

उपर्युक्त वर्णन में ताबईन की जमात से रिवायतें वर्णन हुईं के उन लोगों ने 20 रकात संपादन कीं, उन्हों ने अपेन ज़माने में लोगों को 20 रकात तरावी संपादन करते हुए देखा, जो स्पष्ट है के सहाबा किराम या महान ताबईन हैं।

ताबईन वे उच्च लोग हैं जिन्हों ने सीधे सहाबा किराम से लाभ उठाया (यथा अपने जीवन में उनसे मिले), इन के द्वारा नबूवत के ज्ञान से आभूषण हुए, उन के आचरण को सीधे व स्पष्टतः अपनी आँखों से देखा, एवं उसी के अनुसार अमल करते रहे।

किसी सत्यनिष्ठ व सत्यवादी एवं सत्य पर अमल करने वाले के लिए सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का व्यवाहर, सहाबा किराम व ताबईन इज़ाम का अमल काफी है।

दुसरा भागः

बहुमत विद्वान – हनफी, शवाफेअ एवं हंबली फुक़्हा का अमल

प्रथम दलीलः

20 रकात तरावीह पर सहाबा किराम का बहुमत व ऐक्य विद्वन, कूफा वाले, सवाफेअ एवं फुक़्हा किराम की एक बड़ी जमात का अमल है। जैसा के उमदतु खारी शरह सहीह बुखारी में हैः-

भाषांतरः अल्लामा इब्न अब्दुल बर्र रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमाया (20 रकात तरावीह) यही सम्पूर्ण विद्वानों का क़ौल है तथा सम्पूर्ण कूफा वालों का यही धर्म है, इमाम शाफेअ रहमतुल्लाहि अलैह एवं अधिकतर फुक़्हा किराम ने यही कहा है तथा यही श्रेष्ठ बात है।

(उमदतुल खारी शरह सहीह बुखारी, किताब उत तरावीह, जिल्द 08, पः 246)

दूसरी दलीलः

उमदतुल खारी के लेखक अल्लामा बद्रउद्दीन ऐनी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 855 हिज्री) ने लिखा हैः-

भाषांतरः हनफी इमामों, शाफेअ इमामों, हंबली इमामों ने 20 रकात तरावीह पर इस हदीस पाक को दलील बनाया जैसे इमाम बैहखी ने अपनी सहीह सनद के साथ सहाबी रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हज़रत

साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित किया है। आप ने फरमाया के सहाबा किराम एवं ताबईन इज़ाम हज़रत उमर फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य समय में 20 रकात तरावीह पढ़ा करते थे तथा हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एवं हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़िलाफत के ज़माने में इसी प्रकार (20 रकात तरावीह) पढ़ा करते थे।

(उमदतुल खारी शरह सहीह बुखारी, जिल्द 05, किताब अज़ान, पः 459)

चारो इमाम- इमाम आज़म अबु हनीफा, इमाम शाफेअ, इमाम अहमद बिन हंबल एवं एक कथन के अनुसार इमाम मालिक रहीमुल्लाह तआला का निश्चत है के तरावीह के नमाज़ 20 रकात तरावीह ही है।

जब के इमाम मालिक का एक और कथन 20 रकात तरावीह एवं 11 रकात नफ्ल का हैय यथा पूर्ण 36 रकात जिस में तरावीह कैसा भी 20 रकात ही होते हैं।

तीसरी दलीलः

अल्लामा इब्न नुजैम मिस्री हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 970 हिज्री) अल बहरुर राईख में लिखते हैः-

तरावीह की नमाज़ की 20 रकात हैं। बहुमत फुक़्हा का कथन यही है एवं पूरब व पश्चिम में मुसलमानों का अमल इसी पर है।

(अल बहर उर राईख, किताब उस सलात, जिल्द 02, पः 117)

चौथी दलीलः

अल्लामा इब्न रुश्द मालिकी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 595 हिज्री) ने बिदयतुल मुजतहिद में 20 रकात तरावीह से संबंधित चारों इमामों का धर्म व्याख्या किया हैः-

भाषांतरः इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैह अपने एक कथन के अनुसार इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह, इमाम शाफेअ रहमतुल्लाहि अलैह, इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैह तथा इमाम दाऊद रहमतुल्लाहि अलैह ने 20 रकात तरावीह को अपनाया है। जो वित्र के अतिरिक्त है।

(बिदयतुल मुजतहिद, किताब उस सलात, जिल्द 01, पः 210)

20 रकात तरावीह हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की स्पष्टीकरण

हज़रत ग़ौसे आज़म शैख अब्दुल खादिर जीलानी हसनी हुसैनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल ग़ुनिया लि तालिबी में लिखते हैः-

भाषांतरः तरावीह की नमाज़ 20 रकात है।

(अल ग़ुनिया ली तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 02, पः 16)

20 रकात तरावीह – उम्मत के इमामों का निर्णय

अल्लामा शलबी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा हैः-

भाषांतरः तरावीह की नमाज़ हमारे (अहनाफ के) पास 20 रकात हैं तथा यही शाफेअ एवं इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमुल्लाह का धर्म है। अल्लामा खासी अयाज़ मालिकी रहमतुल्लाहि अलैह ने बहुमत फुक़्हा से 20 रकात तरावीह ही व्याख्या की है।

(तबयीन उल हक़ाइक़, किताब उस सलात, बाब वित्र वन नवाफिल, जिल्द 01, पः 443)

अल्लामा इब्न आबिदीन शामी हनफी नक्षबंदी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1252 हिज्री) ने लिखा हैः

भाषांतरः 20 रकात तरावीह है, बहुमत फुक़्हा किराम का यही धर्म है तथा इसी पर पूरब व पश्चिम के इसलाम जाती का अमल है।

(रद्दुल मुहतार, किताब उस सलात, जिल्द 01, पः 521)

मौसुअतुल फिक़्हीय कुवैतियह में बहुमत इसलाम के फुक़्हा के धर्म से संबंधित युँ वर्णन हैः-

भाषांतरः बहुमत हनफी फुक़्हा, शवाफेअ, हनाबिला एवं कुछ मालिकिय का धर्म ये है के तरावीह में 20 रकात है।

(अल मौसुअतुल फिक़्हीय कुवैतियह)

मौसुअह फिक़्हीय में अल्लामा अली सनहूरी की इबादत वर्णन हैः-

भाषांतरः अल्लामा अली सनहूरी ने फरमायाः इस पर लोगों का अमल है तथा आज तक यही अमल सम्पूर्ण शहरों में चला आ रहा है.

(अल मौसुअतुल फिक़्हीय कुवैतियह, जिल्द 27, पः 141/142)

इमाम तिरमिज़ी रहमतुल्लाहि अलैह 20 रकात तरावीह से संबंधित बहुमत विद्वान का धर्म वर्णन करते हैः-

भाषांतरः हज़रत उमर फारूख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा अन्य सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की रिवायत की बुनियाद पर बहुमत विद्वानों का निर्णय व फैसला ये है ते तरावीह बीस रकात है। तथा यही कथन हज़रत सुफियान सौरी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक एवं इमाम शाफेअ रहीमुल्लाह का है।

(जामेअ तिरमीज़ी, जिल्द 02, पः 159, हदीस संख्याः 806)

मक्के वालों का अमल – इमाम शाफेअ का वर्णन

इमाम तिरमिज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी जामेअ में इमाम शाफेअ रहमतुल्लाहि अलैह का कथन व्याख्या कियाः-

भाषांतरः इमाम शाफेअ रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः इसी प्रकार मैं ने अपने शहर मक्के वालों को पाया के वे 20 रकात तरावीह संपादन करते हैं।

(जामेअ तिरमीज़ी, जिल्द 02, पः 159, हदीस संख्याः 806)

20 रकात तरावीह – कूफा वालों का अमल

सहीह बुखारी के अनुवादक इमाम इब्न बत्ताल रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 449 हिज्री) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत व्याख्या करने के बाद फरमाते हैः-

भाषांतरः और इसी प्रकार 20 रकात तरावीह की रिवायत हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा हज़रत उबई बिन कअब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, कूफा वाले एवं इमाम शाफेअ रहमतुल्लाहि अलैह ने भी यही कहा है के तरावीह 20 रकात हैं।

(शरह सहीह बुखारी लिल इब्न बुताल)

मुसन्नफ इब्न अबी शैबा के हवाले से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के आसार के सिलसिले में मदीने वाले का अमल गुज़र चुका है के हज़रत अबी बिन कअबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीने में 20 रकात तरावीह पढ़ाया करते थे।

(मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 05, पः 224, बाब- 680, हदीस संख्याः 7766)

20 रकात तरावीह – अहनाफ के फ़ुक़्हा का मसलक

प्रथम दलीलः

हज़रत सरक़िसी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 483 हिज्री) ने मबसूत में लिखाः

भाषांतरः हमारे पास तरावीह की नमाज़ वित्र के अतिरिक्त 20 रकात है।

(अल मबसूत, सरक़िसी, किताब उस सलात, अल फसलिल अव्वली फी अददी रकाअत अत तरावीह)

दूसरी दलीलः

अल्लामा कासानी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 587 हिज्री) फरमाते हैः-

भाषांतरः तरावीह की रकातें 10 सलाम के साथ पाँच तरवीहात (20 रकात) हैं, 2 सलाम के साथ 4 रकात एक तरवीहा कहलाती है, बहुमत विद्वान व ज्ञानियों का यही कथन है।

(बदाअ उस सनाअ, जिल्द 01, पः 644)

इमाम अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 710 हिज्री) फरमाते हैः-

भाषांतरः रमज़ान के महीने में 20 रकात तरावीह मसनून (सुन्नत) है।

(कंज़ उद दखाईख, किताब उस सलात, पः 36)

इमाम ज़ैलई हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 743 हिज्री) लिखते हैः-

भाषांतरः तरावीह के नमाज़ हमारे मसलक में 20 रकात है तथा इमाम शाफेअ व इमाम अहमद बिन हम्बल रहीमुल्लाह ने भी यही फरमाया है, अल्लामा खाज़ी अयाज़ मालिकी रहमतुल्लाहि अलैह ने बहुमत विद्वान से यही व्याख्या की है।

(तबईन उल हखाइख, किताब उश सलात, जिल्द 01, पः 443)

पाँचवी दलीलः

अल्लामा इब्न नुजैम मिस्री रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 970 हिज्री) ने अल बहर उर राईख में लिखा हैः-

भाषांतरः बहुमत फुक़्हा का कथन यही है के तरावीह बीस रकात है। (ये तरावीह की संख्या का वर्णन है) जैसा के मौता इमाम मालिक में यज़ीद बिन रोमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत उपलब्ध है के हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के धन्य समय में लोग 23 रकात (20 रकात तरावीह एवं 3 रकात वित्र) पढ़ते थे, इसी पर पूरब व पश्चिम में मुसलमानों का अमल है।

(अल बहर उर राईख, जिल्द 02, पः 117)

फतावा आलमगिरी में तरावीह के वर्णन के प्रति व्याख्या हैः-

भाषांतरः तरावीह की नमाज़ पाँच तरावीहात है, प्रत्येक तरवीहा में 4 रकात है जो 2 सलाम से संपादन की जाती है, यदि जमात के साथ पाँच तरवीहात से अधिक पढ़ें तो हमारे पास मकरूह है।

(अल फतावा आलमगिरी, जिल्द 01, किताब उस सलात, पः 115)

अल्लामा अब्दुर रहमान मुहम्मद सामान्यतया रूप से शैख ज़ादी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1074 हिज्री) ने मजमअ उल अनहुर में लिखा के वित्र के अतिरिक्त तरावीह की नमाज़ 20 रकात है।

(मजमअ उल अनहुर, किताब उस सलात, फस्ल फित तरावीह)

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह का स्पष्टीकरण

आठवीं दलीलः

हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस दहेलवी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1176 हिज्री) हज्जतुल्लाहिल बलिग़ा में लिखते हैः-

भाषांतरः रकात तरावीह की संख्या 20 है।

(हुज्जतुल्लाहिल बलिग़ा, जिल्द 02, पः 19 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, हाशिया, जिल्द 01, पः 366)

नौवी हलीलः

अल्लामा हसकफी रहमतुल्लाहि अलैह ने दुर्रे मुक़तार में लिखा हैः- तरावीह की नमाज़ 20 रकात है, 2-2 रकात कर के 20 रकात तरावीह संपादन करना तथा प्रत्येक 4 रकात के बीच विराम व अंतर सुन्नत है।

(दुर्रे मुक़तार, जिल्द 01, पः 521)

दसवीं दलीलः-

इस सिलसिले में अल्लामा इब्न आबिदीन शामी हनफी नक्षबंदी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1252 हिज्री) लिखते हैः-

भाषांतरः ये बात रहस्य नहीं के फराइज़ के साथ वाली सुन्नतें अगरचे सम्पूर्ण होती है। किन्तु ये महीना क्यों के जहाँ तक हो सके कमाल का है, इसी लिए इस में अधिक कमाल पैदा करने वाली सुन्नतों का समावेश व इज़ाफा किया गया, ताकि ये अधिक कमाल वाली हो जाएँ।

(रद्दुल मुहतार, किताब उस सलात, जिल्द 01, पः 521)

20 रकात तरावीह फिक़्ह मालिकी में

अल्लामा इब्न रुश्द मालिकी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 595 हिज्री) बिदायतुल मुजतहिद में लिखा हैः-

भाषांतरः एक कथन के अनुसार इमाम मालिक एवं इमाम आज़म अबु हनीफा, इमाम शाफेअ, इमाम अहमद एवं इमाम दाउद रहीमुल्लाह ने वित्र के सिवा 20 रकात तरावीह पढ़ने को अपानया है।

(बिदायतुल मुजतहिद, जिल्द 01, पः 210)

20 रकात तरावीह फिक़्ह शाफेअ में

प्रथम दलीलः

अल्लामा इब्न हज्र हैतमी मक्की शाफई रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 973 हिज्री) अपनी पुस्तक अल मिन्हाज उल खवीम में लिखते हैं-

भाषांतरः 20 रकात तरावीह का नियुक्त है के ज़ईफ हदीस में आया है, अतः सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने 20 रकात तरावीह पर अनुकूलता व ऐक्य किया है।

(अल मिन्हाज उल खवीम, पः 138)

अल्लामा अबु वलीद सुलैमान बिन खलफ अँदूसी मालिकी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 474 हिज्री) ने अपनी पुस्तक अल मुन्तखा शरह मवत्ता में लिखा हैः-

भाषांतरः इमाम शाफेअ रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत यज़ीद बिन रोमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हदीस से दलील करते हुए वित्र के अतिरिक्त तरावीह 20 रकात कहा है।

(अल मुन्तखा शरह मवत्ता)

20 रकात तरावीह फिक़्ह हम्बली में

अल्लामा इब्न खुद्दामा हम्बली रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 620 हिज्री) ने अपनी पुस्तक अल कापी में लिखा हैः-

भाषांतरः सुन्नत ये है के तरावीह बीस रकात जमात के साथ संपादन की जाए एवं इमाम 3 तराक वित्र की भी इमामत करें।

(अल कापी लिल इब्न खुद्दामा, किताब उस सलात)

36 रकात – मदीना वालों की विशेषता

शाफेई फुक़्हा फरमाते हैः मदीने वाले 36 रकातें संपादन करते हैं, 20 रकात तरावीह क्यों के पाँच तरवीहात हैं तथा मक्के वाले हर दो तरवीहात के बीच तवाफ करते तो मदीने पर तवाफ के बदले चार रकात पर निर्धारित एक तरवीहा संपादन करने लगे, ताकि वे अमल में मक्के वालों के बराबर हो जाएँ तथा शैखैन लोगों ने फरमाया के ये मदीने वालों के सिवा दुसरों के लिए श्रेष्ठ नहीं, यही कथन माननीय है। जैसा के अल्लामा रमली रहमतुल्लाहि अलैह ने फरमायाः क्यों के मदीना सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम प्रवासन का प्रवासन का स्थान है एवं इस में आप का पावन रौज़ा होने के कारण मदीने वालों को दुसरों के समान विशेष कृपा व संबोधन प्राप्त है।

(अल मौसुअतुल फिक़्हिया अल कुवैतिया, जिल्द 27, पः 143)

सहीह हदीनों से साबित हो चुका के हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 20 रकात नमाज़ तरावीह संपादन करते थे तथा इन तीन खुलेफा राशिदीन के धन्य ज़माने का व्यवहार व अमल यही था।

बल्कि 20 रकात तरावीह पर सहाबा किराम का इजमा व अनुकूलता हो चुका। जैसा के सम्पूर्ण इमामों एवं इसलाम के फुक़्हा के स्पष्टीकरण से मालूम हुआ। अधिक सामान्य रूप से इसलाम में और विशेष हरमैन शरीफ में भी 20 रकात तरावीह पर ही अमल व कर्तव्य है।

20 रकात तरावीह – सहाबा के दौर से 15 सदी तक

उपर्युक्त सम्पूर्ण हदीसें, सहाबा का मामूल, इमामों के लोकोक्ति तथा फिक़्हा व मुहद्दिसीन की विस्तार तथा समुदाय के ज्ञान कि शिक्षा से स्पष्ट हो गया के तरावीह कि नमाज़ 20 रकात हैं।

इस पुस्तक में वर्णन हुई इन सहाबा व ताबईन, फिक़्हा व मुहद्दिसीन के नाम मुबारक सन वारी वर्णन किए जा रहे हैं। जिन्हों ने तरावीह के रकातों की संख्या 20 होने का स्पष्टीकरण किया है। ताकि पता चले के 20 रकात तरावीह पर प्रत्येक सदी व दौर एवं ज़माने में लगातार होता रहा तथा कभी रुका नहीं।

हज़रत उ़मर फारूख रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 23 हिज्री

हज़रत उ़समान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 35 हिज्री

हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 40 हिज्री

हज़रत अ़बदुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 32 हिज्री

हज़रत उबई़ बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 30 हिज्री

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 40 हिज्री

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 68 हिज्री

हज़रत साई़ब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 80 हिज्री

हज़रत शतीर बिन शकल अ़बसी कूफी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 69 हिज्री

हज़रत हारिस बिन अ़ब्दुल्लाह हमदानी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 65 हिज्री

हज़रत अबु अब्दुर रहमान अब्दुल्लाह बिन हबीब कूफी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 74 हिज्री

हज़रत सुवैद बिन ग़फला रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 81 हिज्री

हज़रत ज़ैद बिन वहब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 83 हिज्री

हज़रत अबुल बक़तरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 83 हिज्री

हज़रत हज़रत सई़द बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 95 हिज्री

हज़रत सई़द बसरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 100 हिज्री

हज़रत हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 110 हिज्री

हज़रत अता इ़ब्न उबई रिबाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 114 हिज्री

हज़रत इ़ब्न अबी मुलैका रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 117 हिज्री

हज़रत यज़ीद बिन रूमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 130 हिज्री

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ रुफीअ़ रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 130 हिज्री

हज़रत अबु सई़द यहया बिन सई़द अन्सारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 143 हिज्री

हज़रत इमाम आमश रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 148 हिज्री

हज़रत इ़माम आज़म अबु हनीफा नोअ़मान बिन साबित रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 150 हिज्री

हज़रत सुफयान सौरी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 159 हिज्री

हज़रत इ़माम मालिक बिन अनस रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 179 हिज्री

हज़रत अ़बदुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु 181 हिज्री

इ़माम अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इद्रीस शाफेअ़ रहमतुल्लाहि अलैह 204 हिज्री

इ़माम अब्दुर रज़्ज़ाख सनआ़नी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 211 हिज्री

इ़माम अबु बक्र इ़ब्न अबी शैबा रहमतुल्लाहि अलैह 235 हिज्री

इ़माम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाहि अलैह 241 हिज्री

इ़माम अबु मुहम्मद अब्दुल हमीद बिन हुमैद रहमतुल्लाहि अलैह 249 हिज्री

इ़माम अबु ईसी मुहम्मद बिन ईसा तिरमीज़ी रहमतुल्लाहि अलैह 279 हिज्री

इमाम मुहम्मद बिन नस्र मरवज़ी रहमतुल्लाहि अलैह 294 हिज्री

इ़माम जअ़फर बिन मुहम्मद फरयाबी रहमतुल्लाहि अलैह 301 हिज्री

इ़माम अहमद बिन शुअ़ईब नसाई रहमतुल्लाहि अलैह 303 हिज्री

इ़माम सुलैमान बिन अहमद तबरानी रहमतुल्लाहि अलैह 360 हिज्री

इ़माम अबुल हसन अ़ली खल्फ इ़ब्न बत्ताल रहमतुल्लाहि अलैह 449 हिज्री

इ़माम अबु बक्र अहमद बिन हुसैन बैहखी शाफेअ़ रहमतुल्लाहि अलैह 458 हिज्री

अल्लामा अबु उ़मर यूसुफ बिन अब्दुल्लाह नामवर इ़ब्न अब्दुल बर्र रहमतुल्लाहि अलैह 463 हिज्री

अ़ल्लामा अबुल वलीद मालिकी रहमतुल्लाहि अलैह 474 हिज्री

शम्सुल आई़मा अबु बक्र मुहम्मद बिन अ़हमद सरक़िसी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 483 हिज्री

अ़ल्लामा खाज़ी अबु फज़्ल इयाज़ बिन मूसा मालिकी रहमतुल्लाहि अलैह 644 हिज्री

हज़रत ग़ौसे-आ़ज़म अबु मुहम्मद शैख अब्दुल खादर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैह 561 हिज्री

इमाम अबु बक्र बिन मसऊद कासानी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 587 हिज्री

अ़ल्लामा अबु अल वलीद मुहम्मद बिन अहमद नामवर इ़ब्न रुश्द हफीद मालिकी 595 हिज्री

अ़ल्लामा मुबारक बिन मुहम्मद जज़री नामवर इ़ब्न असीर रहमतुल्लाहि अलैह 606 हिज्री

अ़ल्लामा अबु मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन खुदामा मखदसी हम्बली रहमतुल्लाहि अलैह 620 हिज्री

इ़माम अबु ज़करिया शर्फउद्दीन नववी शाफेअ़ रहमतुल्लाहि अलैह 676 हिज्री

इ़माम अबुल बरकात अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 710 हिज्री

अ़ल्लामा तखी उद्दीन इ़ब्न तैयमिया 728 हिज्री

इ़माम अबु मुहम्मद उसमान बिन अ़ली ज़ैलई़ हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 743 हिज्री

अल्लामा हाफिज़ नूरउद्दीन अ़ली बिन अबु बक्र हैसमी रहमतुल्लाहि अलैह 807 हिज्री

अ़ल्लामा हाफिज़ अहमद बिन अ़ली इ़ब्न हज्र असखलानी शाफअ़ रहमतुल्लाहि अलैह 852 हिज्री

अ़ल्लामा बद्र उद्दीन अबु मुहम्मद महमूद बिन अहमद ऐनी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 855 हिज्री

अ़ल्लामा कमाल उद्दीन मुहम्मद बिन अ़बदुल वाहिद नामवर इ़ब्न हिम्माम हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 861 हिज्री

इ़माम जलाल उद्दीन अब्दुर रहमान बिन अबु बक्र सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह 911 हिज्री

अ़ल्लामा मुहम्मद बिन यूसुफ सालेह रहमतुल्लाहि अलैह 942 हिज्री

अ़ल्लामा ज़ैनउद्दीन बिन इ़ब्राहीम नामवर इ़ब्न नुजैम हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 970 हिज्री

अ़ल्लामा अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद, इ़ब्न हज्र मक्की हैतमी शाफअ़ रहमतुल्लाहि अलैह 973 हिज्री

अल्लामा अ़लाउद्दीन अली अल मुत्तखी बिन हिसाम उद्दीन अल हिन्दी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 975 हिज्री

मुल्ला अ़ली बिन सुल्तान मुहम्मद खारी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 1014 हिज्री

अल्लामा अब्दुर रहमान मुहम्मद नामवर- शेख ज़ादह हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 1078 हिज्री

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस दहेलवी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 1176 हिज्री

अ़ल्लामा सैय्यद मुहम्मद अमीन इ़ब्न आबिदीन शामी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह 1252 हिज्री

हज़रत अबुल हसनात सैय्यद अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी हनफी मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह 1384 हिज्री

अ़ल्लामा दकतूर वहबा ज़ुहैली – जीवित

खातमु मुहखखीन, सफवतुल मुहद्दिसीन, ज़ुबदतुल आ़रेफीन हज़रत अबुल हसनात सैय्यद अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी खादरी मुजद्दिदी मुहद्दिसे-देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह (देहांतः 1384 हिज्री) ने अपनी पुस्तक ज़ुजाजातुल मसाबीह में बैहखी, तबरानी, इ़ब्न अबी शैबा, बग़वी तथा अब्द बिन हुमैद के हवाले से रिवायात वर्णन करते हैं के तरावीह कि नमाज़ 20 रकात ही है।

अधिक आप (रहमतुल्लाहि अलैह) बैहखी के हवाले निम्नलिखित रिवायत वर्णन फरमाई हैः-

भाषांतरः- हज़रत शबरमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, जो हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के छात्र हैं, आप रमज़ान के महीने में 5 तराविहात 20 रकात पढाया करते थे।

(ज़ुजाजातुल मसाबीह अल मुहद्दिसे-देक्कन, कुताबुस सलाह, बाब खियाम शहर रमज़ान, जिल्द 1, पः 366)

2 पाठ

बीस रकात की रिवायत पर एतराज़ व विरोध के जवाब

20 रकात तरावीह हज़रत नबी अरकम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने संपादन की जैसा के हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मरफुअ रिवायत माननीय हदीस की पुस्तकों के हवाले से पः 26 पर गुज़र चुकी है।

जो लोग 8 रकात तरावीह के इच्छुक हैं वे इस रिवायत को ज़ईफ घोषित कर देते हैं एवं कहते हैं के इस रिवायत की सनद के एक रावी अबु शैबा इब्राहीम बिन उसमान ज़ईफ हैं। इस लिए रिवायत से 20 रकात तरावीह पर दलील नही की जा सकती।

इस विरोध एतेराज के जवाब में कुछ अवश्य स्पष्टीकरण पेश की जाती हैं उसे निम्नलिखित दर्शन करें-

(1)- हज़रत अबु शैबा के बारे में मुहद्दिसीन के अनेक क़ौल

20 रकात से संबंधित मरफूअ रिवायत की सनद के एक रावी अबु शैबा इब्राहीम बिन उसमान के बारे में कुछ मुहद्दिसीन ने कलाम किया है किन्तु कुछ मुहद्दिसीन ने इन की तअदील भी की है।

इन तिरमिज़ी एवं इमाम इब्न माजह ने इन से रिवायत की है, अल्लामा मिज़्ज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने तहज़ीब उल कमाल में रावी अबु शैबा से संबंधित लिखा हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु अहमद बिन अदी ने कहाः अबु शैबा की कई अधिकारपूर्ण व प्रामाणिक रिवायतें हैं।

(तहज़ीब उल तहज़ीब, बाबुल अलिफ)

हाफिज़ इब्न हज्र असखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने तहज़ीब उल तहज़ीब में लिखा हैः-

भाषांतरः यज़ीद बिन हारून ने कहा के इस ज़माने में हज़रत अबु शैबा से अधिक न्याय व इन्साफ करने वाले कोई विचारपति के पद पर संबोधित नहीं हुए।

(तहज़ीब उल तहज़ीब)

हदीस के इमाम के स्पष्टीकरण से ये मालूम होता है के हज़रत अबु शैबा इस स्तर व दर्जे के ज़ईफ नहीं के इन की रिवायतों को संक्षेप रूप से नज़र अंदाज़ कर दिया जाए। इसी कारण से हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा हैः-

भाषांतरः जबके मुहद्दिस अबु बक्र के दादा हज़रत अबु शैबा इस प्रकार ज़ईफ नहीं के इन की रिवायत को मुतलक़ तर्क कर दिया जाए।

(अल फतावा अल अज़ीज़िया)

(2)- बाद के कथावाचक का ज़ईफ इमाम आज़म के दलील पर असर अंदाज़ नहीं

अबु शैबा की अदालत या ज़ईफ का अनुसंधान इन लोगों के लिए अवश्य है जिन्हों ने अबु शैबा के वास्ते से या इन की सनद से मरवी हदीस से दलील किया। यदि कुछ मुहद्दिसीन ने अबु शैबा को ज़ईफ कहा है तब भी इश कारण से इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह का दलील करना कमज़ोर नहीं होता क्यों के इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैह रवाह के पाँचवें स्तर (*सिग़ार ताबईन*) में शामिल हैं।

आप रहमतुल्लाहि अलैह का देहान्त 150 हिज्री में हुआ। जब के हज़रत अबु शैबा सातवें स्तर व दर्जे (*किताब इत्तेबा ताबईन*) में शुमार किए जाते हैं। जिन का 169 हिज्री में हुआ। इस से पता चलता है के इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैह, हज़रत अबु शैबा रहमतुल्लाहि अलैह के पेशरो, एवं इन पर माननीय है।

ये एक स्पष्ट बात है के बाद के ज़माने में तारी होने वाला ज़ईफ पेशरो व ललोग के दलील पर असर अंदाज़ नहीं हो सकता।

जैसा के इमाम अब्दुल वह्हाब शआरानी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा हैः-

भाषांतरः यदि रावियों में ज़ईफ के कारण से इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह के धर्म की किसी दलील को ज़ईफ कहा जाए तो ये ज़ईफ केवल इन रावियों के अनुसार से है। जो इमाम आज़म के बाद सनद में शामिल होते हैं।

(3)- ज़ईफ हदीस "हसन लिग़ैरिही" बनती है कई अनेक व्याख्या से

हदीस के इमामों एवं रिवायत के फन के विशेषज्ञ में किसी इमाम एवं विशेषज्ञ फन ने इस रिवायत को मौज़ूअ एवं झूटी नहीं कहा, बल्कि इन लोग ने ज़ईफ हदीस के संबंधित ये स्पष्टीकरण की है के जब इस की पक्ष में अन्य रिवायत उपलब्ध हों तो अब वे रिवायत ज़ईफ नहीं रहती बल्कि *हसन लिग़ैरिही* हो जाती है जो अमल के योग्य तथा पालन के योग्य है।

हज़रत मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1014 हिज्री) ने लिखा हैः-

भाषांतरः सनदों की अधिकता व कसरत ज़ईफ हदीस को *हसन* के दर्जे कत पहुँचाती है।

(मिरखातुल मफातीह, जिल्द 02, पः 42)

अल्लामा ज़ैनउद्दीन मुहम्मद अब्दुल रौफ मनावी रहमतुल्लाहि अलैह (1031 हिज्री) ने ज़ईफ हदीसों के विषय में लिखा हैः-

भाषांतरः यदि इन सम्पूर्ण हदीसों का ज़ईफ होना फर्ज़ कर लिया जाए तब भी सनदों की कसरत एवं रावियों के संख्या की नीव पर ज़ईफ हदीस, मज़बूत व प्रभावशाली घोषित पाती है, इस सच्चाई का इनकार हदीस के फन से उपेक्षक व्यक्ति या कोई पक्षपात करने वाला ही कर सकता है।

(फैज़ उल खदीर)

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1052 हिज्री) ने हदीस के उसूल व नियम में स्पष्टीकरण किया हैः-

भाषांतरः यदि ज़ईफ हदीस की कई सनदें हों जिस से उसके ज़ईफ को पाबजाई होती हो तो उसको, *हसन लिग़ैरिही* कहा जाता है।

(मुखदिमा फी उसूल इल हदीस लिश शैख अब्दुल हक़ दहेलवी)

(4)- उम्मत का हदीस को स्वीकार करना – हदीस प्रमाणिकता व सच्चाई

20 रकात तरावीह पर पूर्ण संसार में प्रत्येक ज़माने में अमल होता रहा, मुसलिम संप्रदाय व उम्मत ने इसे स्वीकार किया है तथा हदीस के इमामों ने लिखा है के *तलख्खी बिल खुबूल* के कारण से रिवायत को प्रभाव व शक्ति प्राप्त होती है। अल्लामा अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन जमालउद्दीन रहमतुल्लाहि अलैह ने अन नुकता अला मुखदिमा में लिखा हैः-

भाषांतरः ऐसी हदीस जिसे उम्मत ने अपना लिया इस का सत्य व सहीह होना निश्चय है।

(तंबीह, अन नुकता अला मुखदिमा)

अल्लामा इब्न सलाह रहमतुल्लाहि अलैह ने इस पुस्तक में दुसरे स्थान पर लिखा हैः-

भाषांतरः जब ज़ईफ हदीस को संप्रदाय अपना ले तो सहीह क़ौल के अनुसार इस पर अमल किया जाता है।

(अन नुकता अला मुखदिमा इब्न सलाह)

हज़रत इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह ने तदरीब उर रावी में लिखा हैः-

भाषांतरः जब लोग हदीस पाक को स्वीकार कर लें तो इस के सहीह होने का निर्णय किया जाएगा अगरचे इस की सहीह सनद ना हो।

(तदरीब उर रावी लिस सुयूती अल अव्वल उस सहीह)

जब हर दौर में एवं पूरब व पश्चिम के सम्पूर्ण क्षेत्रों में संप्रदाय ने 20 रकात तरावीह की रिवायत को स्वीकार किया तथा इस पर लगातार अमल किया तो ज़ईफ सनद होने के बावजूद इस की हैसियत मुहद्दिसी किराम तथा विद्वान व इमामों की स्पष्टीकरण के अनुसार सहीह एवं माननीय (प्रामाणिक) हदीस की है।

अर्थात तलख्खी बिल खुबूल का दर्जा प्राप्त होने के बाद इस रिवायत की शक्ति व ज़ईफ पर वार्तालाप, रवाह की अदालत वजहालत का अनुसंधान की स्पष्ट अवश्यकता नहीं इसी कारण से हदीस के रावी अबु शैबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़ईफ होना इस रिवायत से दलील के लिए हानिकारक नहीं।

इमाम शम्सउद्दीन शखावी रहमतुल्लाहि अलैह ने फत्हुल मुग़ीस शरह उल अलफियतिल हदीस में लिखा हैः-

भाषांतरः जब उम्मत व संप्रदाय ज़ईफ हदीस को स्वीकार कर ले तो सहीह क़ौल के अनुसार इस पर अमल किया जाएगा यहाँ तक के वे इस हैसियत से *मुतावातिर* के दर्जे में है के इस के कारण से *नस खतई* (प्रामाणिक व धर्मवैधानिक सबूत) को निष्प्रभाव व मन्सूख किया जा सकता है।

(फत्हुल मुग़ीस शरह उल अलफियतिल हदीस लिस सखावी)

(5) मुजतहिद का इस्तेदलाल हदीस के प्रामाणिकता की दलील

20 रकात तरावीह के विषय पर वर्णन हदीस से चारो इमाम ने इस्तेदलाल (वियोजन व निगमन) किया। कोई मुजतहिद किसी हदीस से इस्तेदलाल करे तो ये अमल इस हदीस के सहीह होने की अलामत व दलील होती है।

जैसा के अल्लामा इब्न नुजैम मिस्री रहमतुल्लाहि अलैह ने अल बहर उर राईख शरह कंज़ुल दखाईख में लिखा हैः-

भाषांतरः मुजतहिद जब किसी हदीस से इस्तेदलाल करता है तो इन का इस्तेदलाल इस बात की इलामत व लक्षण है के वे हदीस सहीह है, अर्थात मुजतहिद के इस्तेदलाल के बाद हदीस की प्रामाणिकता व सच्चाई के लिए किसी और चीज़ की अवश्यकता नहीं।

(अल बहर उर राईख शरह कंज़ुल दखाईख ली इब्न नुजैम मिस्री)

(6) सहाबा की परम्परा से प्रोत्साहन

इस रिवायत के अनुसार व अनुरूप में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के आसार व व्यवसाय कसरत से व्याख्या हैं।

जैसा के विस्तार के साथ वर्णन किया जा चुका है तथा सहाबा के आसार व व्यवसाय से भी अबु शैबा की मरफुअ रिवायत को प्रोत्साहन व आधार प्राप्त होती है।

(7) सहाबा किराम का अमल किसी असल सहीह पर दलालत करता है

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का 20 रकात तरावीह संपादन करना इस बात की दलील है के अवश्य इन लोगों के पेश नज़र सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का फरमान या व्यवहार व व्यवसाय साबित रहा होगा।

जैसा के अल्लामा इब्न नुजैम मिस्री रहमतुल्लाहि अलैह ने अल बहर उर राईख शरह कंज़ुल दखाईख में लिखा हैः-

भाषांतरः इमाम अबु यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैह ने इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह से तरावीह के विषय में पूछा तो फरमायाः तरवाही सुन्नते-मौक़ेदह है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इसे अपनी ओर से अपनाया नहीं तथा ना आप इस सिलसिले में नव तरीक़ा रचना व अविष्कार करने वाले हैं, आप ने अपने पास उपलब्ध किसी असल के कारण इस का आदेश दिया, या हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आदेश फरमाने के कारण।

(अल बहर उर राईख शरह कंज़ुल दखाईख ली इब्न नुजैम)

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आदेश की प्रतीक्षा करते रहते के इस का संपादन व समापन करें, एक-एक अदा को तकते के उसे अमल में लाएँ। दिल में बसाएँ, क्या इन बुज़ुर्गों के नाते ये विचार भी किया जा सकता है के उन्हों ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के विरुद्ध किया हो?

इन उच्च लोगों ने 20 रकात पर अमल किया है तो निश्चय इन के पास कोई मज़बूत दलील होगी जो हमारे लिए हिदायत व मार्गदर्शन का सामान है।

(8) 20 रकात तरावीह समझ व विद्या के अनुसार

तरावीह की नमाज़ की रकातों की संख्या *20* निर्धारित व नियुक्त होने की हिकमत ये है के फर्ज़ नमाज़ों की संख्या वित्र को मिला कर 20 हैं। तरावीह सुन्नत है तथा सुन्नतों और सुन्नतें फर्ज़ के समपान करने वाली होती हैं।

फर्ज़ नमाज़ों के समापन व संपादन के लिए इन की संख्या के अनुसार तरावीह भी 20 रकात रखी गई।

जैसा के अल्लामा इब्न नुजैम मिस्री हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 970 हिज्री) ने अल्लामा हलबी रहमतुल्लाहि अलैह के हवाले से वर्णन किया हैः-

भाषांतरः तरावीह के 20 रकात होने में हिकमत व विद्या ये है के सुन्नतें फर्ज़ के समापन के लिए मशरूअ हुई हैं तथा फर्ज़ नमाज़ें वित्र के साथ 20 रकात हैं। इसी कारण से तरावीह की रकातों की संख्या भी इसी संख्या व मात्रा है, ताकि सम्पूर्ण करने वाली रकातें सम्पूर्ण की जाने वाली रकातों के बराबर हो जाएँ।

(अल बहर उर राईख ली इब्न नुजैम किताब उस सलाह, जिल्द 02, पः 117)

इमाम ज़ैलई हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 743 हिज्री) लिखते हैः-

भाषांतरः तरावीह की नमाज़ बीस रकात निर्धारित व नियुक्त होने की हिकमत- अल्लाह तआला श्रेष्ठतर जानने वाले है। ये है के तरावीह की नमाज़ की संख्या में फर्ज़ के समान हो जाए ताकि सर्व फर्ज़ (जैसे वित्र) बराबर हो जाएँ, क्यों के वे बीस हैं।

(तबयीन उल हक़ाईख, किताब उस सलात)

(9) 20 रकात तरावीह एवं भाषाशास्त्र विषय

शब्द *तरावीह* अरबी भाषा का शब्द है। ये *तरवीहा* का बहुवचन है। इस का अर्थ है "एक बार विश्राम करना" क्यों के इस नमाज़ में प्रत्येक 4 रकात के बाद कुछ अंतर व विराम दिया जाता है। जो लोगों के विश्राम का कारण है। इस कारण से प्रत्येक 4 के सामूहिक रूप से तरावीह कहते हैं।

ये पूर्ण पाँच तरवीहात होते हैं। इस लिए इसे जमा (बहुवचन) का शब्त तरावीह कहा जाता है। इमाम इब्न मन्जूर ने निसान उल अरब में लिखा हैः-

भाषांतरः रमज़ान के महीने में *तरवीहा* इस लिए कहा जाता है के लोग प्रत्येक 4 रकात के बाद विश्राम व आराम करते हैं, हदीस पाक में *सलात उत तरावीह* के शब्द आए हैं, क्यों के वे लोग प्रत्येक 4 रकात के बाद अंतर व विराम ले कर आराम लेते, तरावीह *तरवीहा* का बहुवचन है, यथा एक बार आराम लेना जैसे *तसलीमा* एक बार सलाम फेरना।

(लिसान उल अरब, ली इब्न मनज़ूर)

अरबी भाषा में बहुवचन 2 से अधिक के लिए कही जाती है। यदि तरावीह की नमाज़ 8 रकात मान ली जाए तो इस पर शब्द तरावीह का अर्थ ही आधार ना आएगा। जबके 8 रकात कहने वाले लोग भी इस नमाज़ को तरावीह के शब्द से याद करते हैं, 8 रकात केवल 2 तरावीह होते हैं तथा अरबी भाषा में बहुवचन 2 से अधिक के लिए कही जाती है।

उपर्युक्त वर्णन के बिना अरबा भाषा के नियम भी इस बात के विवशता हैं के तरावीह की 8 रकात ना हों, इसी लिए हदीसों के अतिरिक्त शब्दकोश के अनुसार से भी तरावीह की नमाज़ की 20 रकातें ही घोषित पाती हैं।

8 रकात की रिवायत की वास्तविक अर्थ व तात्पर्य

सहीह बुखारी में हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है, जिस में 8 रकात का वर्णन उपलब्ध हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु सलमा बिन अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से वर्णित है, वे वर्णन करते हैं के उन्हों ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु

तआला अन्हा से निवेदन कियाः रमज़ान के महीने में हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नमाज़ की क्या स्थिति होती? तो हज़रत बीबी आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमायाः सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रमज़ान के महीने और इस के अतिरिक्त महीनों में 1 रकात से अधिक संपादन ना करते, 4 रकात संपादन करते, इन के खुशू व खुज़ू और उच्चता के क्या कहने, फिर 4 रकात संपादन करते, इन के उच्चता के बारे में मत पूछो, 3 रकात संपादन किया करते। हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमायाः मैं ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! क् आप वित्र संपादन करने से पूर्व विश्राम करते हैं, तो सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः अए आयशा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) निस्संदेह मेरी आँखें सोती हैं तथा दिल नहीं सोता।

(सहीह बुखारी, किताबुल तहज्जुद, पः 154, हदीस संख्याः 1147 / बाब फज़्ल मिन खियामी रमज़ान, पः 269, हदीस संख्याः 2013, पः 504, हदीस संख्याः 3569 / सहीह मुसलिम, किताब उस सलातिल मुसाफिरीन, जिल्द 01, पः 254, हदीस संख्याः 738)

8 रकात की रिवायत – तरावीह के लिए दलील के रूप में अस्वीकार

इस रिवायत से रकात तरावीह की संख्या जैसे महत्व विषय के गुण में दलील नहीं किया जा सकता, क्यों के हाफिज़ इब्न हजरअसखलानी रहमतुल्लाहि अलैह ने फत्हुल बारी शरह सहीह बुखारी में लिखा हैः-

हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से जहाँ 11 रकात की रिवायत व्याख्या है वहीं 7 रकात, 9 रकात और 13 रकात की रिवायतें भी उपलब्ध है, जिस में 3 रकात वित्र घटा दिए जाएँ तो 4 रकात, 6 रकात, 8 रकात और 10 रकात होते हैं।

एक ही नमाज़ से संबंधित इस असमानता के साथ रिवायतें होने के कारण से कुछ मुहद्दिसीन ने इस रिवायत को *मुज़तरिब* (विपरीत व विरुद्ध) कहा तथा *मुज़तरिब* रिवायत से दलील नहीं किया जा सकता, फत्हुल बारी शरह सहीह बुखारी में वर्णन हैः-

भाषांतरः अल्लामा खुरतुबी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 671 हिज्री) ने कहा के हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ये रिवायतें बहुत से ज्ञानी लोगों के लिए अनेक रूप का कारण स्पष्ट किया है, यहाँ तक के कुछ विद्वानों ने उसे मुज़तरिब घोषित किया।

(फत्हुल बारी शरह सहीह बुखारी)

8 रकात वाली रिवायत तहज्जुद से संबंधित है

उम्मुल मोमिनीन की रिवायत के बिना पर कहा जाता है के तरावीह की नमाज़ 8 रकात है। इस रिवायत से तरावीह की नमाज़ की 8 रकात होने की दलील करना, स्पष्ट रूप से गलती है। जो हदीस के ज्ञान के फनों, हदीस रिवायत तथा हदीस की समझ के बिल्कुल विरुद्ध है।

यदि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की इस रिवायत को ध्यान से देखा जाए तो मालूम होता है के ये रिवायत तरावीह से संबंधित ही नहीं। बल्कि तहज्जुद से संबंधित है, क्यों के हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रमज़ान एवं ग़ैर-रमज़ान के 8 रकात के बारे में फरमा रही हैं तथा प्रत्येक बुद्धिमान व सन्तुलित व्यक्ति जानता है के तरावीह की नमाज़ केवल रमज़ान में संपादन की जाती है।

ग़ैर-रमज़ान में नहीं! वरना कहना होगा के तरावीह वर्ष भर पढ़ी जाए। जब के इस रिवायत से 8 रकात की दलील करने वाले भी वर्ष भर तरावीह नहीं पढ़ते!!

इस रिवायत पर अमल इसी समय होगा जब के 8 रकात से तहज्जुद तात्पर्य व अर्थ लिया जाए। इन 8 रकातों का तहज्जुद होना हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की निम्नलिखित रिवायत से प्रकट होता है, सहीह बुखारी में वर्णन हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदतना आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है, हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रात में 11 रकात संपादन करते तथा जब फज्र तुलूअ हो ती तो 2 सीमित रकातें संपादन करते फिर दाहिने पहलू पर विश्राम करते, यहाँ तक के मोज़्ज़िन उपस्थित होते तथा आप की सेवा में निवेदन करते।

(सहीह बुखारी, जिल्द 02, पः 933, हदीस संख्याः 6310)

8 रकात से तात्पर्य तहज्जदु ही है

सहीह बुखारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से व्याख्या रिवायत से स्पष्ट रूप से साबित होता है के 8 रकात वाली रिवायत तहज्जुद से संबंधित है के नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम विश्राम फरमा कर 11 रकात संपादन करते, फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अज़ान कहते, जैसा के सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, वे फरमाते हैं के मैं एक दिन मेरी मौसी उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमुना रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के यहाँ उपस्थित था, तो रसूल पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कुछ देर अपनी धन्य पत्नी के साथ वार्तालाप की, फिर विश्राम किया, जब रात का अंतिम तिहाई हिस्सा हुआ तो आप तशरीफ लाए तथा आकाश की ओर दर्शन कर के ये आयत तिलावत कीः भाषांतरः निश्चय आसमानों तथा धरती का ताज एवं रात व

दिन की गरदिश में बुद्धिमानों के लिए निशानियाँ हैं, फिर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उठे, वुज़ू और मिसवाक कर के 11 रकात नमाज़ संपादन की। फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अज़ान कही तो नबी पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने 2 रकात संपादन की फिर बाहर तशरीफ लाए तथा फज्र की नमाज़ संपादन की।

(सहीह बुखारी, किताब तफसीर, जिल्द 02, पः 657, हदीस संख्याः 4569)

सहीह बुखारी में वर्णन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित रिवायत में स्पष्टीकरण है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने रमज़ान में और इस के अतिरिक्त महीनों में तहज्जुद की नमाज़ कभी नहीं छूटती। अल्लाह तआला का आदेश हैः --- के कारण से – के साथ तहज्जुद की नमाज़ का प्रबन्ध किए। 8 रकात से तरावीह तात्पर्य लिया जाए तो मानना होगा के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस रात तहज्जुद की नमाज़ संपादन ना की।

किसी हदीस पाक का ऐसा तात्पर्य व अर्थ निकालना, कभी भी श्रेष्ठ नहीं जिस से अन्य व्यवसाय व मामलात के बारे में उचित रूप से स्पष्ट ना की जा सके, किसी रिवायत का ऐसा अर्थ करना श्रेष्ठ नहीं जिस से नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नाते से मामूल समाप्त होना अनिवार्य आ जाए।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की रिवायत से गलत दलील करते हुए तरावीह 8 रकात मानने पर अनिवार्य आने वाली खराबियाँ

यदि यहाँ आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा 8 रकात की रिवायत की तरावीह से संबंधित वर्णन या होतीं तो आप (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) खुद भी 8 रकात तरावीह संपादन करतीं तथा अपने ज़माने में इसलाम जाती का सुन्नत के विरुद्ध कर्म व अमल देख कर शान्त ना रहतीं।

जब के हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से ऐसी कोई रिवायत व्याख्या नहीं है के आप 8 रकात तरावीह पढ़ती हों। आप खुलेफा राशिदीन के ज़माने में रहीं, सहाबा किराम निश्चय रूप से 20 रकात तरावीह संपादन करते रहे।

यदि ये अमल सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत के विरुद्ध होता तो आप अवस्य नकीर फरमातें, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का 20 रकात तरावीह पर सकवत अपनाया इस बात पर स्पष्ट दलील है के आप की 8 रकात वाली रिवायत तरावीह से संबंधित नहीं।

उन्हों ने 20 रकात तरावीह पर सरवत अपना कर के अपने आप को सहाबा के दौर में स्थापित व घटित होने वाली इजमाअ (बहुमत) में शामिल किया जैसा के गुज़र चुका के खुलेफा राशिदीन के दौर में 20 रकात तरावीह पर इजमाअ व अनुकूलता हो चुका, इस के बावजूद 8 रकात की रिवायत को तरावीह से संबंधित घोषित देना दुसरे शब्द में गोया ये कहना के सहाबा किराम ने इस पर निश्चय नहीं किया था जब के इस मसले में सहाबा किराम का निश्चय वर्णन करने वाले इमामों में इमाम अब्दुर बर्र रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 463 हिज्री) शम्सुल अइमा सरक़िसी हनफी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 483 हिज्री) इमाम कासानी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 587 हिज्री) अल्लामा इब्न खुदामा मखदिसी हम्बली रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 620 हिज्री) शैख इब्न तैयमिया (देहान्तः 728 हिज्री) अल्लामा ज़ैलई रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 743 हिज्री), अल्लामा बद्रउद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि अलैह (देहन्तः 855 हिज्री) और मुला अली खारी (देहान्तः 1014 हिज्री) शामिल है।

ग़ैर-अनुयायी का और इस के स्पष्टीकरण

ग़ैर-अनुयायी (ग़ैर-मुकल्लिदीन) लोग इस बात का इनकार करते हैं के 8 रकात वाली रिवायत तहज्जुद से संबंधित है तथा कहते हैं के तहज्जुद और तरावीह एक ही नमाज़ है। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से तहज्जुद के अतिरिक्त रमज़ान में कोई और नमाज़ साबित नहीं।

ग़ैर-मुक़ल्लिदीन की ये सोंच नुसूस के विरुद्ध है। कोई बुद्धिमान मनुष्य इस बात का इनकार नहीं कर सकता के तरावीह और तहज्जुद 2 अलग नमाज़ें हैं। इस बात पर हदीसों का तवील सिलसिला है। तरावीह और तहज्जुद के बीच अंतर खुद तरावीह और तहज्जुद हैं हम यहाँ तरावीह और तहज्जुद दोनों नमाज़ें अपनी 2 अलग हैसियतें रखती हैः-

(1)- तरावीह की नमाज़ रात के आरंभ हिस्से में संपादन की जाती है तथा तहज्जुद की नमाज़ रात के अंतिम हिस्से में पढ़ी जाती है। इस सिलसिले में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से व्याख्या सहीह बुखारी की रिवायत का एक हिस्सा दर्शन होः-

भाषांतरः जिस नमाज़ से लोग सो रहे हैं वे इस नमाज़ से श्रेष्ठतर है जिस के लिए लोग खियाम कर रहे हैं। इस से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का उद्देश्य रात के अंतिम हिस्से में तहज्जुद की नमाज़ के संपादन करने का था जब के लोग रात के आरम्भ हिस्से में तरावीह की नमाज़ संपादन करते थे।

(सहीह बुखारी, जिल्द 01, पः 269, हदीस संख्याः 1906 / सुनन अल कुबरा लिल बैहखी, किताब उस सलात, जिल्द 02, पः 695, हदीस संख्याः 4603)

(2)- र के रोज़ों की फरज़ियत 2 हिज्री में हुई जब के तहज्जुद इस से पूर्व भी पढ़ी जाती थी, रोज़ों की फरज़ियत के बाद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः

भाषांतरः निश्चय अल्लाह तआला ने तुम पर रमज़ान के रोज़े फर्ज़ किए हैं तथा मैं ने इस के खियाम तरावीह को तुम्हारे लिए सुन्नत घोषित किया तो जिस ने इमान के साथ सवाब की नीयत से इस महीने में रोज़ा रखा तथा तरावीह की नमाज़ का प्रबन्ध किया वे अपने पापों से इस दिन की तरह निकल जाता है जिस दिन इस की माँ ने इसे जन्म दिया।

(सुनन अन नसाई, किताब उस सियाम, जिल्द 01, पः 308, हदीस संख्याः 2180 / सुनन इब्न माजह, पः 94, हदीस संख्याः 1318 / कंज़ुल उम्माल, किताब उस सौम, जिल्द 04, पः 215, हदीस संख्याः 23655/23722/24289)

इस के बावजूद जो तरावीह तथा तहज्जुद को एक नमाज़ कहना सत्य का इनकार है।

(3)- तहज्जुद की रकातों में विशेष रूप से कोई नियुक्त व निश्चित नहीं है। ये बात गुज़र चुकी के हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वित्र के सिवा 4, 6, 8, और 10 रकात की रिवायतें व्याख्या है जबके तरावीह का 20 रकात निश्चित और नियुक्त है। किसी निश्चत एवं तय कर्म को ग़ैर-निश्चत चीज़ पर निर्धारित करना स्पष्ट रूप से गलती एवं अखल के विरुद्ध है।

(4)- सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के किसी आदेश या सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के किसी क़ौल व कथन से ये साबित नहीं के तरावीह और तहज्जुद एक ही नमाज़ है।

(5)- तहज्जुद की नमाज़ और अन्य महीनों में संपादन की जाती है जबके तरावीह केवल रमज़ान के महीने के साथ विशेष है।

(6)- तहज्जुद की नमाज़ से संबंधित रिवायतों से स्पष्ट होता है के तहज्जुद सो कर उठने के बाद संपादन की जाती है तथा तरावीह से पूर्व सोने का वर्णन किसी हदीस पाक में नहीं मिलता।

(7)- सहीह मुसलिम में रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमायाः हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अंतिम अशरे (10 दिन) में ऐसा प्रबन्ध करते जो दुसरे अवसर पर नहीं करते।

(सहीह मुसलिम, किताब उल इतेकाफ, जिल्द 01, पः 376, हदीस संख्याः 2845)

अधिक सहीह बुखारी व मुसलिम में रिवायत हैः-

20 रकात मानने से हदीसों में मेल सम्भव